मिशकातुल मसाबीह

(किताबुस सौम)



लेखक: इमाम वलीउद्दीन मुहम्मद अब्दुल्लाह ख़तीब तबरेज़ी

तर्जुमा: मुहम्मद शिराज़ (कैफ़ी)

प्रूफ़ रीडिंग: इरफ़ान अली

तहक़ीक़ ओ तख़रीज: हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई रहमतुल्लाह अलैह

بسم الله الرحمن الرحيم

كتاب الصَّوْم

रोज़ो का बयान

الْفَصْلُ الأول

पहला भाग

(١٩٥٦) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا دخل شهر رَمَضَانُ فُتِحَتْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِينُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فُتِحَتْ أَبْوَابُ الرَّحْمَة

(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

1956. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्ललाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।"*** और एक रिवायत में है: ***"जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शैतानो को जकड़ दिया जाता है।"*** और एक रिवायत में है: ***"रहमत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं"।***[1] **(सही)**

(١٩٥٧) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فِي الْجَنَّةِ ثَمَانِيَةُ أَبْوَابٍ مِنْهَا: بَابٌ يُسَمَّى الرَّيَّانَ لَا يدْخلهُ إِلَّا الصائمون"

(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

1957. सहल बिन साद रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्ललाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, उनमे से एक दरवाज़े का नाम "रय्यान" है, इसमें से सिर्फ रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे."।***[2] **(सही)**

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1899), मुस्लिम (2496)

2. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (3257), मुस्लिम (2710)

1958. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“जो शख्स इमान व इख्लास और सवाब की नियत से रोज़े रखे तो उसके साबका (पिछले) गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, जो शख्स ईमान व इख्लास और सवाब की नियत से रमज़ान में क़ियाम करे (नमाज़ तरावीह का एहतिमाम करे) तो उसके साबका (पिछले) गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, और जो शख्स ईमान व इख्लास और सवाब की नियत से शबे क़द्र का क़ियाम करे तो उसके साबका (पिछले) गुनाह बख्श दिए जाते हैं.”।***[1] **(सही)**

(١٩٥٨) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. وَمَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. وَمَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ» (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

1959. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“इब्ने आदम के हर नेक अमल को दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ा दिया जाता है, अल्लाह तआला फरमाता है : रोज़े के सिवा, क्यूंकि वो मेरे लिए है और मै ही इसकी जज़ा (बदला) दूंगा, वो अपनी ख्वाहिश और अपने खाने को मेरी वजह से छोड़ता है रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ हैं, एक ख़ुशी तो उसके अफ्तार के वक़्त है जबकि एक ख़ुशी अपने रब से मुलाक़ात के वक़्त है, और रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह के पास कस्तूरी की खुशबू से भी ज़्यादा बेहतर है, और रोज़ा ढाल है, जिस रोज़ तुम में से किसी का रोज़ा हो तो वो फहश गोई और बेहूदा गोई से इज्तिनाब करे (बचे), अगर कोई उसे बुरा भला कहे या उससे लड़ाई झगड़ा करे तो वो कहे कि मैं रोज़ेदार हूँ”।***[2] **(सही)**

(١٩٥٩) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ يُضَاعَفُ الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: إِلَّا الصَّوْمَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ يَدَعُ شَهْوَتَهُ وَطَعَامَهُ مِنْ أَجْلِي لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ: فَرْحَةٌ عِنْدَ فِطْرِهِ وَفَرْحَةٌ عِنْدَ لِقَاءِ رَبِّهِ وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ وَالصِّيَامُ جُنَّةٌ وَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمِ أَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفُثْ وَلَا يصخب وفإن سَابَّهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلْيَقُلْ إِنِّي امْرُؤٌ صَائِمٌ" (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (37), मुस्लिम (1781)

2. मुत्तफिक अलैह, बुख़ारी (1904), मुस्लिम (2706,2707)

الْفَصْلُ الثَّانِي
दूसरा भाग

(١٩٦٠) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ أَوَّلُ لَيْلَةٍ مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ صُفِّدَتِ الشَّيَاطِينُ وَمَرَدَةُ الْجِنِّ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ النَّارِ فَلم يفتح مِنْهَا بَاب الْجَنَّةِ فَلَمْ يُغْلَقْ مِنْهَا بَابٌ وَيُنَادِي مُنَادٍ: يَا بَاغِيَ الْخَيْرِ أَقْبِلْ وَيَا بَاغِيَ الشَّرِّ أقصر ن وَلِلَّهِ عُتَقَاءُ مِنَ النَّارِ وَذَلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

1960. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब रमज़ान की पहली रात होती है तो शैतानो और सरकश जिनो को जकड़ दिया जाता है, जहन्नम के तमाम (सारे) दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं उनमे से कोई दरवाज़ा नहीं खोला जाता, और जन्नत के तमाम (सारे) दरवाज़े खोल दिए जाते है और उनमे से कोई दरवाज़ा बंद नहीं किया जाता, और मनादी (ऐलान) करने वाला ऐलान करता है, खैर ओ भलाई के तालिब! आगे बढ, और शर (बुराई) के तालिब! रुक जा, और अल्लाह तआला उस रात में बहुत लोगो को जहन्नम से आज़ाद करता हैं, और हर रात ऐसे होता है"।***[1] (ज़ईफ़)

(١٩٦١) وَرَوَاهُ أَحْمد عَن رجل وَقَالَ التِّرْمِذِيّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

1961. और इमाम अहमद ने इसे किसी सहाबी से रिवायत किया है, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है।[2] **(हसन)**

الْفَصْلُ الثَّالِث
तीसरा भाग

(١٩٦٢) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُبَارَكٌ فَرَضَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهُ تُفْتَحُ فِيهِ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَتُغْلَقُ فِيهِ أَبْوَابُ الْجَحِيمِ وَتُغَلُّ فِيهِ مَرَدَةُ الشَّيَاطِينِ لِلَّهِ فِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَ خَيْرَهَا فَقَدْ حُرِمَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ

1962. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"माहे मुबारक रमज़ान तुम्हारे पास आया है, अल्लाह ने इसका रोज़ा तुम पर फ़र्ज़ किया है, इसमें आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और सरकश शैतान बंद***

---

1. *सनद ज़ईफ़ तिरमिज़ी (682) उन्होंने कहा यह हदीस ग़रीब है जैसे हदीस 1961 में है, इब्ने माजा (1642)*
2. *हसन, अहमद (4/311-312, हदीस 18794)*

कर दिए जाते हैं, इस (महीने) में एक रात हज़ार महीनो से बेहतर है, जो शख्स इसकी खैर और भलाई से महरूम कर दिया गया तो वो (हर खैर और भलाई से) महरूम कर दिया गया"।[1] **(सही)**

1963. अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"रोज़ा और क़ुरान बन्दे के लिए सिफारिश करेंगे, रोज़ा अर्ज़ करेगा, ए मेरे रब! मैंने दिन के वक़्त खाने पीने और ख्वाहिशात से इसे रोके रखा, इसके बारे में मेरी सिफारिश क़ुबूल फरमा और क़ुरान अर्ज़ करेगा: मैंने इसे रात के वक़्त सोने से रोके रखा, इसके बारे में मेरी सिफारिश क़ुबूल फरमा, इन दोनों*** की सिफारिश कुबूल की जाएगी"।[2] **(हसन)**

(١٩٦٣) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَقُولُ الصِّيَامُ: أَيْ رَبِّ إِنِّي مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَوَاتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِي فِيهِ وَيَقُولُ الْقُرْآنُ: مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِي فِيهِ فيشفعان ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

1964. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रमज़ान आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"यह महीना जो तुम्हारे पास आया है इसमें एक रात है जो कि हज़ार महीनो से बेहतर है, और जो शख्स इससे महरूम कर दिया गया तो वो हर क़िस्म की खैर ओ भलाई से महरूम कर दिया गया और इसकी खैर से महरूम शख्स हर क़िस्म की खैर ओ भलाई से महरूम है."।***[3] **(ज़ईफ़)**

(١٩٦٤) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: دَخَلَ رَمَضَانُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ هَذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ وَفِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مَنْ أَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَلَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا إِلَّا كل محروم» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1965. सलमान फारसी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाबान के आखरी रोज़ हमें ख़िताब करते हुए फ़रमाया: ***"लोगो एक बड़ा बरकत वाला महीना तुम,***

(١٩٦٥) وَعَن سلمَان قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي آخِرِ يَوْمٍ مِنْ شَعْبَانَ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ أَظَلَّكُمْ شَهْرٌ عَظِيمٌ مُبَارَكٌ شَهْرٌ فِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مَنْ أَلْفِ شهر جعل الله

1. हसन, मुसनद अहमद (2/230, हदीस 7418), नसाई (2108)

2. हसन, शुएबुल ईमान बैहक़ी (1839)

3. सनद ज़ईफ़, इब्ने माजा (1644)

पर साया फगुन (आने वाला) हुआ है, इसमें एक रात हज़ार महीनो से बेहतर है, अल्लाह ने इसका रोज़ा फ़र्ज़ और रात का क़याम नफिल क़रार दिया है, जिसने इसमें कोई नफिल काम किया तो वो इसके अलावा बाक़ी महीनो में फ़र्ज़ अदा करने वाले की तरह है और जिसने इसमें फ़र्ज़ अदा किया तो वो इस शख्स की तरह है जिसने इसके अलावा महीनो में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये, यह सब्र का महीना है जबकि सब्र का सवाब जन्नत है, यह हमदर्दी का महीना है, इसमें मोमिन का रिज़्क बढ़ा दिया जाता है, जो इसमें किसी रोज़ेदार को इफ्तारी कराये तो वो इसके गुनाहों की मग़फिरत का और जहन्नम से आज़ादी का सबब होगा और इसे भी इस (रोज़ेदार) के बराबर सवाब मिलता है और इसके अज्र में कोई कमी नहीं की जाती.” हमने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल हम सब ये ताक़त नहीं रखते कि हम रोज़ेदार को इफ़्तार कराएं, तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया: ***“अल्लाह यह सवाब उस शख्स को भी अत फरमा देता है, जो लस्सी के घूँट या एक खजूर या पानी के एक घूँट से किसी रोज़ेदार की इफ्तारी कराता है और जो शख्स किसी रोज़ेदार को पेट भर कर खाना खिलाये तो अल्लाह उसे मेरे हौज़ से (पानी) पिलाएगा तो उसे जन्नत में दाख़िल हो जाने तक प्यास नहीं लगेगी और यह ऐसा महीना है जिसका पहला (अशरा) रहमत, इसका बीच वाला अशरा मगफिरत और इसका आखिर जहन्नम से आज़ादी है, और जो शख्स इसमें अपने गुलाम, नौकर से कम काम लेगा तो तो अल्लाह उसकी मग़फिरत फरमा देगा और उसे जहन्नम से आज़ाद कर देगा”।***[1] **(ज़ईफ़)**

تَعَالَى صِيَامَهُ فَرِيضَةً وَقِيَامَ لَيْلِهِ تَطَوُّعًا مَنْ تَقَرَّبَ فِيهِ بخصلة من الْخَيْرِ كَانَ كَمَنْ أَدَّى فَرِيضَةً فِيمَا سِوَاهُ وَمَنْ أَدَّى فَرِيضَةً فِيهِ كَانَ كَمَنْ أَدَّى سَبْعِينَ فَرِيضَةً فِيمَا سِوَاهُ وَهُوَ شَهْرُ الصَّبْرِ وَالصَّبْر ثَوَابه الْجنَّة وَشهر الْمُوَاسَاة وَشهر يزْدَاد فِيهِ رِزْقُ الْمُؤْمِنِ مَنْ فَطَّرَ فِيهِ صَائِمًا كَانَ لَهُ مَغْفِرَةً لِذُنُوبِهِ وَعِتْقَ رَقَبَتِهِ مِنَ النَّارِ وَكَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَجْرِهِ شَيْءٌ» قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَيْسَ كلنا يجد مَا نُفَطِّرُ بِهِ الصَّائِمَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُعْطِي اللَّهُ هَذَا الثَّوَابَ مَنْ فَطَّرَ صَائِمًا عَلَى مَذْقَةِ لَبَنٍ أَوْ تَمْرَةٍ أَوْ شَرْبَةٍ مِنْ مَاءٍ وَمَنْ أَشْبَعَ صَائِمًا سَقَاهُ اللَّهُ مِنْ حَوْضِي شَرْبَةً لَا يَظْمَأُ حَتَّى يَدْخُلَ الْجَنَّةَ

---

1. सनद ज़ईफ़ शुएबुल ईमान बैहक़ी (3608), इब्ने ख़ुज़ैमा (1887)

(١٩٦٦) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ أَطْلَقَ كُلَّ أَسِيرٍ وَأَعْطَى كُلَّ سَائِلٍ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ

1966. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, जब रमज़ान का महीना आता है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर क़ैदी को आज़ाद कर देते और हर मांगने वाले को दिया करते थे।[1] **(ज़ईफ़)**

(١٩٦٧) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْجَنَّةَ تُزَخْرَفُ لِرَمَضَانَ مِنْ رَأْسِ الْحَوْلِ إِلَى حَوْلِ قَابِلٍ» . قَالَ: " فَإِذَا كَانَ أَوَّلُ يَوْمٍ مِنْ رَمَضَانَ هَبَّتْ رِيحٌ تَحْتَ الْعَرْشِ مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ عَلَى الْحُورِ الْعِينِ فَيَقُلْنَ: يَا رَبِّ اجْعَلْ لَنَا مِنْ عِبَادِكَ أَزْوَاجًا تَقَرُّ بِهِمْ أَعْيُنُنَا وَتَقَرُّ أَعْيُنُهُمْ بِنَا ". رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1967. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जन्नत को रमज़ान के लिए पूरा साल सजाया जाता है" फ़रमाया: "जब रमज़ान का पहला दिन होता है तो अर्श के नीचे जन्नत के पत्तो से हवा चलती हुई हूरो तक पहुँचती है तो वो कहती हैं: ए रब अपने बन्दों में से हमारे शौहर बना दे, हम उनसे अपनी आँखें ठंडी करें और वो हमसे अपनी आँखें ठंडी करें"।*** इमाम बैहक़ी ने तीनो अहादीस शोएबुल इमान में रिवायत की हैं।[2] **(ज़ईफ़)**

(١٩٦٨) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «يُغْفَرُ لِأُمَّتِهِ فِي آخِرِ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ» . قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَهِيَ لَيْلَةُ الْقَدْرِ؟ قَالَ: «لَا وَلَكِنَّ الْعَامِلَ إِنَّمَا يُوَفَّى أجره إِذا قضى عمله» . رَوَاهُ أَحْمد

1968. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"रमज़ान की आखरी रात इनकी (यानी मेरी) उम्मत को बख्श दिया जाता है" अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल क्या वो शबे कद्र है? फ़रमाया: "नहीं, लेकिन जब काम करने वाला अपना काम मुकम्मल कर लेता है तो उसे पूरा पूरा अज्र दिया जाता है"।***[3] **(ज़ईफ़)**

---

1. सनद ज़ईफ़ जिद्दन शुएबुल ईमान बैहक़ी (3629)

2. ज़ईफ़, शुएबुल ईमान बैहक़ी (3633)

3. सनद ज़ईफ़, मुसनद अहमद (2/292, हदीस 7904)

بَاب رُؤْيَة الْهِلَال
चाँद देखने का बयान

الْفَصْل الأول
पहला भाग

(١٩٦٩) عَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَصُومُوا حَتَّى تَرَوُا الْهِلَالَ وَلَا تُفْطِرُوا حَتَّى تَرَوْهُ فَإِنْ غُمَّ عَلَيْكُمْ فَاقْدِرُوا لَهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «الشَّهْرُ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ لَيْلَةً فَلَا تَصُومُوا حَتَّى تَرَوْهُ فَإِنْ غُمَّ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا الْعِدَّةَ ثَلَاثِينَ
(مُتَّفق عَلَيْهِ)

1969. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"तुम (रमजान का चाँद) देख कर रोज़ा रखो और (शव्वाल का चाँद) देख कर रोज़ा रखना बंद करो, अगर आसमान पर बादल हो तो इसके लिए (तीस दिन) अंदाज़ा कर लो" और एक रिवायत में है, फ़रमाया: "महीना उनतीस दिन का भी होता है, तुम (रमज़ान का चाँद) देख कर रोज़ा रखो, अगर आसमान पर बादल हो तो फिर तीस की गिनती पूरी कर लो."।***[1] **(सही)**

(١٩٧٠) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صُومُوا لِرُؤْيَتِهِ وَأَفْطِرُوا لِرُؤْيَتِهِ فَإِنْ غم عَلَيْكُم فَأَكْمِلُوا عِدَّةَ شَعْبَانَ ثَلَاثِينَ
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

1970. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"इसको (रमज़ान का चाँद) देख कर रोज़ा रखो और इसको (शव्वाल का चाँद) देख कर रोज़ा रखना बंद कर दो, अगर आसमान पर बादल हो तो फिर शाबान की गिनती तीस तक पूरी करो."।***[2] **(सही)**

(١٩٧١) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أمة أُميَّة لَا تكْتب وَلَا تحسب الشَّهْرُ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا» . وَعَقَدَ الْإِبْهَامَ فِي الثَّالِثَةِ. ثُمَّ قَالَ: «الشَّهْرُ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا»

1971. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"बेशक हम अनपढ़ लोग हैं, हम ना लिखना जानते हैं और ना हिसाब जानते हैं महीना ऐसा ऐसा (यानी इतने दिनों का) होता है और तीसरी दफा आप ने अंगूठा को बंद कर***

1.मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1906, 1907), मुस्लिम (2498)
2.मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1909), मुस्लिम (2515, 2516)

يَعْنِي تَمَامَ الثَّلَاثِينَ يَعْنِي مَرَّةً تِسْعًا وَعِشْرِينَ وَمرَّة ثَلَاثِينَ
(مُتَّفق عَلَيْهِ)

लिया, फिर आप ने फ़रमाया की महीना ऐसा ऐसा यानी इतने दिनों का होता है. (यानी कभी उनतीस दिनों का) और कभी तीस दिनों का महीना होता है"।[1] **(सही)**

(١٩٧٢) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " شَهْرَا عِيدٍ لَا يَنْقُصَانِ: رَمَضَانُ وَذُو الْحِجَّةِ
(مُتَّفق عَلَيْهِ)

1972. अबू बकरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"ईद के दो महीने, रमज़ान और ज़िलहिज्जा, कम नहीं होते है."।***[2] **(सही)**

(١٩٧٣) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَتَقَدَّمَنَّ أَحَدُكُمْ رَمَضَانَ بِصَوْمِ يَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ رَجُلٌ كَانَ يَصُوم صوما فليصم ذَلِك الْيَوْم
(مُتَّفق عَلَيْهِ)

1973. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"तुममें से कोई शख्स रमज़ान से एक या दो दिन पहले रोज़ा ना रखे मगर वो शख्स कि जिसको हमेशा रोज़ा रखने की आदत हो तो रमज़ान से पहले रोज़ा रख सकता है"।***[3] **(सही)**

الْفَصْلُ الثَّانِي
दूसरा भाग

(١٩٧٤) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا انْتَصَفَ شَعْبَانُ فَلَا تَصُومُوا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

1974. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब निस्फ़ (आधा) शाबान हो जाये तो फिर रोज़ा न रखो"।***[4] **(सही)**

(١٩٧٥) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أحصوا هِلَال شعْبَان لرمضان» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1975. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"रमज़ान के लिए शाबान का चाँद (दिनों) की गिनती करो"।***[5] **(ज़ईफ़)**

1.मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1913), मुस्लिम (2511)
2.मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1912), मुस्लिम (2531)
3.मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1914), मुस्लिम (2508)
4.सनद सही, अबू दावूद (2237), तिरमिज़ी (738), इब्ने माजा (1651), दारमी (1747)
5.सनद ज़ईफ़ तिरमिज़ी (687), दारमी (1747)

1976. उम्मे सलमा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शाबान के अलावा दो महीने लगातार रोज़े रखते हुए नही देखा।[1] **(सही)**

(١٩٧٦) وَعَن أم سَلمَة قَالَت: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ إِلَّا شَعْبَانَ وَرَمَضَانَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1977. अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं जिस शख़्स ने शक के दिन का रोज़ा रखा तो उसने अबुल क़ासिम की नाफ़रमानी की।[2] **(ज़ईफ़)**

(١٩٧٧) وَعَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «مَنْ صَامَ الْيَوْمَ الَّذِي يُشَكُّ فِيهِ فَقَدْ عَصَى أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1978. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, एक ऐराबी (देहाती) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उसने कहा: मैंने रमज़ान का चाँद देखा है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं?”*** उसने कहा, जी हाँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“क्या तुम गवाही देते हो की मुहम्मद अल्लाह के रसूल है?”*** उसने कहा, जी हाँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“बिलाल लोगो में ऐलान कर दो कि वो कल रोज़ा रखे”***।[3] **(ज़ईफ़)**

(١٩٧٨) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: " جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ الْهِلَالَ يَعْنِي هِلَالَ رَمَضَانَ فَقَالَ: «أَتَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «أَتَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «يَا بِلَالُ أَذِّنْ فِي النَّاسِ أَن يَصُومُوا غَدا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1979. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं लोग चाँद देखने के लिए जमा हुए तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया कि मैंने इसको देख लिया है, आपने रोज़ा रखा और लोगो को भी रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया।[4] **(सही)**

(١٩٧٩) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: تَرَاءَى النَّاسُ الْهِلَالَ فَأَخْبَرْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي رَأَيْتُهُ فَصَامَ وَأَمَرَ النَّاسَ بِصِيَامِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

1.सही, अबू दावूद (2336), तिरमिज़ी (736), नसाई (2177), इब्ने माजा (1648)

2.सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2334), तिरमिज़ी (686), नसाई (2190), इब्ने माजा (1654), दारमी (1689)

3.सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2340), तिरमिज़ी (691), नसाई (2114, 2115), इब्ने माजा (1652), दारमी (1699)

4.सनद सही, अबू दावूद (2342), दारमी (1698)

الْفَصْلُ الثَّالِثُ
तीसरा भाग

1980. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शाबान के दिनों की गिनती का और महीनो के मुक़ाबले से ज़्यादा एहतियात किया करते थे, फिर आप रमज़ान का चाँद नज़र आने पर रोज़ा रखते, अगर आसमान पर बादल होता तो आप तीस दिन की गिनती पूरी करते फिर रोज़ा रखते।[1] **(सही)**

(١٩٨٠) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَحَفَّظُ مِنْ شَعْبَانَ مَالَا يَتَحَفَّظُ مِنْ غَيْرِهِ. ثُمَّ يَصُومُ لِرُؤْيَةِ رَمَضَانَ فَإِنْ غُمَّ عَلَيْهِ عَدَّ ثَلَاثِينَ يَوْمًا ثُمَّ صَامَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1981. अबू बख़्तरी रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं, हम उमरे के लिए रवाना हुए, जब हमने बतन नख़्ला के मक़ाम पर पड़ाव डाला तो हम चाँद देखने की लिए इखट्टे हुए, तो कुछ लोगो ने कहा: यह तीसरी रात का है, किसी ने कहा: दूसरी रात का है, हम इब्न अब्बास से मिले हमने कहा: हमने चाँद देखा तो किसी ने कहा: वो तीसरी रात का है और किसी ने कहा, दूसरी रात का है, उन्होंने फ़रमाया: तुमने किस रात उसे देखा था? हमने कहा: फुला फुला रात, उन्होंने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"अल्लाह ताआला ने इसको लम्बा कर दिया है चाँद देखने के लिए लिहाज़ा वो चाँद उसी तारीख़ का है जिस तारीख़ को तुमने देखा है"*** और एक रिवायत में यूं आया है की हमने रमज़ान का चाँद इस हाल में देखा की हम ज़ात इरक़ में थे तो हमने एक आदमी को हजरत इब्न अब्बास के पास पूछने के लिए भेजा

(١٩٨١) وَعَنْ أَبِي الْبَخْتَرِيِّ قَالَ: خَرَجْنَا لِلْعُمْرَةِ فَلَمَّا نَزَلْنَا بِبَطْنِ نَخْلَةَ تَرَاءَيْنَا الْهِلَالَ. فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ. وَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ لَيْلَتَيْنِ فَلَقِينَا ابْنَ عَبَّاسٍ فَقُلْنَا: إِنَّا رَأَيْنَا الْهِلَالَ فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ لَيْلَتَيْنِ. فَقَالَ: أَيُّ لَيْلَةٍ رَأَيْتُمُوهُ؟ قُلْنَا: لَيْلَةَ كَذَا وَكَذَا. فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَدَّهُ لِلرُّؤْيَةِ فَهُوَ لِلَيْلَةِ رَأَيْتُمُوهُ وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ. قَالَ: أَهْلَلْنَا رَمَضَانَ وَنَحْنُ بِذَاتِ عِرْقٍ فَأَرْسَلْنَا رَجُلًا إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْأَلُهُ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن الله تَعَالَى قد أَمَدَّهُ لِرُؤْيَتِهِ فَإِنْ أُغْمِيَ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا الْعِدَّةَ» . رَوَاهُ مُسلم

1.सनद सही, अबू दावूद (2325)

तो उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ***“अल्लाह तआला इस चाँद को देखने के लिए लम्बा कर देता है अगर आसमान पर बादल की वजह से चाँद नज़र न आये तो गितनी पूरी करो यानी तीस दिन पूरे करो”।***[1] **(सही)**

1.सही मुस्लिम (2529, 2530)

بَاب فِي مسَائِل مُتَفَرِّقَة من كتاب الصَّوْم
रोजों के मुताल्लिक मुख्तलिफ (विभिन्न) मसाइल

الْفَصْل الأول
पहला भाग

(١٩٨٢) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بركَة (مُتَّفق عَلَيْهِ)

1982. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"सहरी खाया करो क्यूंकि सहरी खाने में बरकत है"।***[1] **(सही)**

(١٩٨٣) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَصْلُ مَا بَيْنَ صِيَامِنَا وَصِيَامِ أَهْلِ الْكِتَابِ أَكْلَةُ السَّحَرِ» . رَوَاهُ مُسلم

1983. अम्र बिन आस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"हमारे और अहले किताब (यहूदी और इसाई) के रोज़ो में सहरी खाने का फ़र्क है"।***[2] **(सही)**

(١٩٨٤) وَعَنْ سَهْلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ النَّاسُ بِخَيْرٍ مَا عَجَّلُوا الْفِطْر (مُتَّفق عَلَيْهِ)

1984. सहल रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब तक लोग अफ्तारी करने में जल्दी करते रहेंगे वो ख़ैर ओ भलाई पर रहेंगे"।***[3] **(सही)**

(١٩٨٥) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَقْبَلَ اللَّيْل من هَهُنَا وَأدبر النَّهَار من هَهُنَا وَغَرَبَتِ الشَّمْسُ فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ» (مُتَّفق عَلَيْهِ)

1985. उमर रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लालाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब रात इस तरफ़ से आ जाये और दिन इस तरफ पलट जाये और सूरज गुरूब (डूब) हो जाये तो रोज़ादार को चाहिए कि अफ़्तार करे"।***[4] **(सही)**

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1923), मुस्लिम (2549)
2. मुस्लिम (2550)
3. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1957), मुस्लिम (2554)
4. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1954), मुस्लिम (2558)

(١٩٨٦) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَہَی رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْوِصَالِ فِي الصَّوْمِ. فَقَالَ لَهُ رجل: إِنَّك تواصل يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَأَيُّكُمْ مِثْلِي إِنِّي أَبَيْتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي ويسقيني" (مُتَّفق عَلَيْهِ)

1986. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोजों में विसाल (लगातार कई रात तक रोज़ा रखना बीच में अफ़्तार न करना) करने से मना फ़रमाया, तो किसी आदमी ने आपसे अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल आप तो विसाल फरमाते हैं? आप ने फ़रमाया: ***"तुम में से कौन मेरी तरह है? मैं रात को सोता हूँ तो मेरा रब मुझे खिला पिला देता है"।***[1] **(सही)**

الْفَصْلُ الثَّانِي

दूसरा भाग

(١٩٨٧) عَن حَفْصَة رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يُجْمِعِ الصِّيَامَ قَبْلَ الْفَجْرِ فَلَا صِيَامَ لَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ أَبُو دَاوُد: وَقفه على حَفْصَة معمر والزبيدي وَابْنُ عُيَيْنَةَ وَيُونُسُ الْأَيْلِيُّ كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ

1987. हफ़्सा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स तुलू फज्र से पहले रोज़े की नियत ना करे तो इसका रोज़ा नहीं."***। तिरमिज़ी, अबू दावूद, नसाई, दारमी और अबू दावूद ने फ़रमाया: मामर, ज़ुबैदी, इब्ने उयैना और युनुस एली ने इस हदीस को हफ्सा पर मौक़ूफ़ क़रार दिया है और इन सबने ज़ोहरी से रिवायत किया है।[2] **(ज़ईफ़)**

(١٩٨٨) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ أَحَدُكُمْ وَالْإِنَاءُ فِي يَدِهِ فَلَا يَضَعْهُ حَتَّى يَقْضِيَ حَاجَتَهُ مِنْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1988. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब तुममें से कोई आज़ान (फज्र) सुने और (खाने पीने का) बरतन इसके हाथ में हो तो वो अपनी ज़रुरत पूरी करने के बाद इसे नीचे रखे"।***[3] **(हसन)**

1.मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1965), मुस्लिम (2566)

2.सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (730), अबू दावूद (2454), नसाई (2334), दारमी (1705)। यह रिवायत मौक़ूफ़न सही है नसाई (2338, 2345)

3.सनद हसन, अबू दावूद (2350)

1989. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"अल्लाह तआला फ़रमाता है: मुझे अपने वो बन्दे ज़्यादा महबूब हैं जो अफ़्तार करने में जल्दी करते हैं"।***[1] **(ज़ईफ़)**

(١٩٨٩) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَحَبُّ عِبَادِي إِلَيَّ أَعْجَلُهُمْ فطرا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1990. सलमान बिन आमिर रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब तुममे से कोई इफ़्तार करे तो वो खजूर से अफ़्तार करे क्यूंकि इसमें बरकत हैं, अगर वो न पाए तो फिर पानी से अफ़्तार कर ले क्यूंकि इसमे पाकी है"।*** अहमद, तिरमिज़ी, अबू दावूद, इब्ने माजा, दारमी, लेकिन इन्होने यह नहीं कहा: "क्यूंकि इसमें बरकत है।" सिर्फ इमाम तिरमिज़ी ने यह अलफ़ाज़ एक दूसरी रिवायत में नक़ल किये हैं।[2] **(सही)**

(١٩٩٠) وَعَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَفْطَرَ أَحَدُكُمْ فَلْيُفْطِرْ عَلَى تَمْرٍ فَإِنَّهُ بَرَكَةٌ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيُفْطِرْ عَلَى مَاءٍ فَإِنَّهُ طَهُورٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ. وَلَمْ يَذْكُرْ: «فَإِنَّهُ بَرَكَةٌ» غَيْرُ التِّرْمِذِيّ

1991. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ (मग़रिब) पढ़ने से पहले चंद (कुछ) खजूरो से अफ़्तार किया करते थे, अगर ताज़ा खजूरें न होती तो फिर चंद छुवारो से और अगर छुवारे न होते तो फिर पानी के चंद घूँट पी लिया करते थे। तिरमिज़ी, अबू दवूद और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है।[3] **(हसन)**

(١٩٩١) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُفْطِرُ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَى رطبات فَإِن لم تكن فتميرات فإنلم تكن تُمَيْرَات حسى حَسَوَاتٍ مِنْ مَاءٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب

1992. ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख्स किसी रोज़ेदार***

(١٩٩٢) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «من فَطَّرَ صَائِمًا أَوْ جَهَّزَ غَازِيًا فَلَهُ

1.सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (700,701)

2.सनद सही, अहमद (4/17-18, 16326, 16328, 16332), तिरमिज़ी (658), अबू दावूद (2355), इब्ने माजा (1699), दारमी (1708)

3.सनद हसन, अबू दावूद (2350)

أَجْرِهِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَمُحْيِي السّنة فِي شرح السّنة وَقَالَ صَحِيح

का रोज़ा अफ़्तार कराये या किसी मुजाहिद की तय्यारी करा दे तो उसे भी इस (रोज़ादार या मुजाहिद) के बराबर सवाब मिलता है"। बैहक़ी फी शोअबुल ईमान और मुहिय्युस सुन्नाह ने शरह अस सुन्नाह में रिवायत किया और उन्होंने कहा: यह रिवायत सही है।[1] **(हसन)**

(١٩٩٣) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَفْطَرَ قَالَ: «ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1993. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ा अफ़्तार करते तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे: ***"प्यास जाती रही, रगें तर हो गईं और अल्लाह ने चाहा तो अज्र साबित हो गया"।***[2] **(हसन)**

(١٩٩٤) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ زُهْرَةَ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَفْطَرَ قَالَ: «اللَّهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد مُرْسلا

1994. माज़ बिन ज़ोहरा रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अफ़्तार करते थे तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे: ***"ऐ अल्लाह मैंने तेरे ही लिए रोज़ा रखा और तेरे ही रिज़्क से इफ़्तार किया"।***[3] अबू दावूद ने इसे मुर्सल रिवायत किया है। **(ज़ईफ़)**

الْفَصْل الثَّالِث
तीसरा भाग

(١٩٩٥) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ الدِّينُ ظَاهِرًا مَا عَجَّلَ النَّاسُ الْفِطْرَ لِأَنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى يُؤَخِّرُونَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1995. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब तक लोग अफ़्तार करने में जल्दी करते रहेंगे दीन ग़ालिब रहेगा क्यूंकि यहूद ओ नसारा (अफ़्तार करने में) ताख़ीर (देर) करते हैं"।***[4] **(हसन)**

---

1. हसन, शोअबुल ईमान बैहक़ी (3667), अल बग़वी फ़ी शरह अस सुन्नाह (1818,1819), तिरमिज़ी (807,1630)
2. सनद हसन, अबू दावूद (2357)
3. सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2358)
4. हसन, अबू दावूद (2353), इब्ने माजा (1698)

1996. अबू अतिया रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं, मैं और मसरूक, आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हमने कहा: उम्मुल मोमिनीन! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा में से दो आदमी हैं इनमे से एक जल्दी अफ़्तार करते हैं और जल्दी नमाज़ (मग़रिब) पढ़ते हैं, जबकि दुसरे देर से अफ़्तार करते हैं और देर से नमाज़ पढ़ते हैं, उन्होंने फ़रमाया: इनमे से कौन जल्दी अफ़्तार करता है और जल्दी नमाज़ पढता है? हमने अर्ज़ किया अब्दुल्लाह बिन मसूद, उन्होंने फ़रमाया: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ऐसे ही किया, जबकि दुसरे अबू मूसा हैं।[1] (**सही**)

(١٩٩٦) وَعَنْ أَبِي عَطِيَّةَ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَمَسْرُوقٌ عَلَى عَائِشَةَ فَقُلْنَا: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ رَجُلَانِ مِنْ أَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمَا يُعَجِّلُ الْإِفْطَارَ وَيُعَجِّلُ الصَّلَاةَ وَالْآخَرُ: يُؤَخِّرُ الْإِفْطَارَ وَيُؤَخِّرُ الصَّلَاةَ. قَالَتْ: أَيُّهُمَا يُعَجِّلُ الْإِفْطَارَ وَيُعَجِّلُ الصَّلَاةَ؟ قُلْنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ. قَالَتْ: هَكَذَا صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْآخَرُ أَبُو مُوسَى. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1997. इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान में मुझे सहरी की दावत देते हुए फ़रमाया: ***"मुबारक खाने की तरफ आओ"।***[2] **(हसन)**

(١٩٩٧) وَعَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ قَالَ: دَعَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى السَّحُورِ فِي رَمَضَانَ فَقَالَ: «هَلُمَّ إِلَى الْغَدَاءِ الْمُبَارَكِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والسنائي

1998. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"मोमिन की बेहतरीन सहरी खजूर है"।***[3] **(सही)**

(١٩٩٨) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ سَحُورُ الْمُؤْمِنِ التَّمْرُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

---

1. सही, मुस्लिम (2556)

2. सनद हसन, अबू दावूद (2344), नसाई (2165)

3. सनद सही, अबू दावूद (2345)

بَاب تَنْزِيه الصَّوْم
रोज़े की पाकी का बयान

الْفَصْل الأول
पहला भाग

(١٩٩٩) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّورِ وَالْعَمَلَ بِهِ فَلَيْسَ لِلَّهِ حَاجَةٌ فِي أَنْ يَدَعَ طَعَامَهُ وَشَرَابه» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1999. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स (रोज़े की हालत में) झूठ और बुरे आमाल (काम) नहीं छोड़ता तो अल्लाह को कोई ज़रुरत नहीं कि वो शख़्स अपना खाना पीना छोड़े"।***[1] **(सही)**

(٢٠٠٠) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَبِّلُ وَيُبَاشِرُ وَهُوَ صَائِمٌ وَكَانَ أَمْلَكَكُمْ لأَرِبه
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2000. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़े की हालत में चूम लिया करते थे और गले मिल लिया करते थे और आप अपनी ख़्वाहिश पर तुम से ज़्यादा क़ाबू रखने वाले थे।[2] **(सही)**

(٢٠٠١) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُدْرِكُهُ الْفَجْرُ فِي رَمَضَانَ وَهُوَ جُنُبٌ مِنْ غَيْرِ حُلْمٍ فَيَغْتَسِلُ وَيَصُومُ
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2001. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रमज़ान में कभी हमबिस्तिरी की वजह से हालते जनाबत में सुबह हो जाती तो आप ग़ुस्ल करते और फिर रोज़ा रखते।[3] **(सही)**

(٢٠٠٢) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ احْتَجَمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ وَاحْتَجَمَ وَهُوَ صَائِمٌ
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2002. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एहराम और रोज़े की हालत में पछने लगवाए।[4] **(सही)**

---

1. बुख़ारी (1903)
2. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1927), मुस्लिम (2576)
3. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1930), मुस्लिम (2590)
4. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1938), मुस्लिम (2885)

2003. अबू हुरैरा राज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“जो शख्स भूल जाये कि वो रोज़े से है और खाले या पीले तो वो अपना रोज़ा पूरा करे क्यूंकि उसे तो अल्लाह ने खिलाया पिलाया है”।***[1] **(सही)**

(٢٠٠٣) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من نسي وَهُوَ صَائِم فأل أَوْ شَرِبَ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللَّهُ وسقاه»

(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2004. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे कि इतने में एक आदमी ने आप की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा: अल्लाह के रसूल! मैं तो मारा गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“तुम्हे क्या हुआ?”*** उसने कहा: मैं रोज़े की हालत में अपनी बीवी से जमा (हमबिस्तिरी) कर बैठा हूँ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“क्या तुम्हारे पास कोई गुलाम है जिसे तुम आज़ाद कर दो?”*** उसने कहा, नहीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“क्या तुम लगातार दो महीने के रोज़े रख सकते हो?”*** उसने कहा, नहीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“क्या तुम साठ मिस्कीनो को खाना खिला सकते हो?”*** उसने कहा, नहीं, आप ने फ़रमाया: ***“बैठ जाओ”*** और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुके रहे, हम इसी हालत में थे कि खजूरो का एक बड़ा टोकरा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“सवाल पूछने वाला कहा है?”*** उस शख़्स ने कहा, मैं हाज़िर हूँ, आप ने फ़रमाया: ***“यह लो इसे सदक़ा कर दो”*** उस आदमी ने कहा, अल्लाह के रसूल! क्या मैं अपने से ज़्यादा मोहताज शख़्स पर सदक़ा करू? अल्लाह की क़सम! (मदीने के) दो

(٢٠٠٤) وَعَن أَبِي هُرَيْرَة قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُول الله هَلَكت. قَالَ: «مَالك؟» قَالَ: وَقَعْتُ عَلَى امْرَأَتِي وَأَنَا صَائِمٌ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ تَجِدُ رَقَبَةً تُعْتِقُهَا؟» . قَالَ: لَا قَالَ: «فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «هَلْ تَجِدُ إِطْعَامَ سِتِّينَ مِسْكِينًا؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «اجْلِسْ» وَمَكَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَبينا نَحْنُ عَلَى ذَلِكَ أُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ وَالْعَرَقُ الْمِكْتَلُ الضَّخْمُ قَالَ: «أَيْنَ السَّائِلُ؟» قَالَ: أَنَا. قَالَ: «خُذْ هَذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ» . فَقَالَ الرَّجُلُ: أَعَلَى أَفْقَرَ مِنِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَوَاللَّهِ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا يُرِيدُ الْحَرَّتَيْنِ أَهْلُ بَيْتٍ أَفْقَرُ م أَهْلِ بَيْتِي. فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى بَدَتْ أَنْيَابُهُ ثُمَّ قَالَ: «أَطْعِمْهُ أهلك»

(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

1. *मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1936), मुस्लिम (2595)*

पथरीले किनारों के बीच कोई ऐसा घर नहीं जो मेरे घर वालो से ज़्यादा ज़रुरतमंद हो, (यह सुन कर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस क़द्र हँसे कि आपके दांत मुबारक ज़ाहिर हो गए, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"इसे अपने घरवालो को खिलाओ"।***[1] **(सही)**

الْفَصْلُ الثَّانِي
दूसरा भाग

(٢٠٠٥) عَن عَائِشَة: أَن النبي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يُقَبِّلُهَا وَهُوَ صَائِم ويمص لسنانها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2005. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़े की हालत में कभी इन (आयशा) का चूम लिया करते थे और इनकी ज़बान चूस लिया करते थे।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٠٦) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ إِنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُبَاشَرَةِ لِلصَّائِمِ فرخص لَهُ. وَأَتَاهُ آخَرُ فَسَأَلَهُ فَنَهَاهُ فَإِذَا الَّذِي رَخَّصَ لَهُ شَيْخٌ وَإِذَا الَّذِي نَهَاهُ شَابٌّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2006. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि किसी आदमी ने रोज़ेदार के लिए अपनी बीवी से गले मिलने के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल पूछा तो आपने उसे इजाज़त दे दी, फिर एक और आदमी आया और उसने आपसे (यही) सवाल पूछा तो आपने उसे मना कर दिया, जिस शख़्स को इजाज़त दी थी वो बूढ़ा आदमी था और जिसे मना किया था वो एक नौजवान शख़्स था।[3] **(हसन)**

(٢٠٠٧) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من ذرعه الْقَيْء وَهُوَ صَائِمٌ فَلَيْسَ عَلَيْهِ قَضَاءٌ وَمَنِ اسْتَقَاءَ عَمْدًا فَلْيَقْضِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2007. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, ररसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जिस शख्स को रोज़ा की हालत में उल्टी आ जाये तो इसपर कोई क़ज़ा नहीं और जो शख़्स जानबूझ कर उल्टी करे तो वो (रोज़े की) क़ज़ा करे"।***

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1936) मुस्लिम (2595)
2. सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2386)
3. सनद हसन, अबू दावूद (2387)

وَالدَّارِمِيُّ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عِيسَى بْنِ يُونُس. وَقَالَ مُحَمَّد يَعْنِي الْبُخَارِيّ لَا أَرَاهُ مَحْفُوظًا

तिरमिज़ी, अबू दावूद, इब्ने माजा, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: मैं इसे महफ़ूज़ नहीं समझता।[1] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٠٨) وَعَنْ مَعْدَانَ بْنِ طَلْحَةَ أَنَّ أَبَا الدَّرْدَاءِ حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاءَ فَأَفْطَر. قَالَ: فَلَقِيتُ ثَوْبَانَ فِي مَسْجِدِ دِمَشْقَ فَقُلْتُ: إِنَّ أَبَا الدَّرْدَاءِ حَدَّثَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاءَ فَأَفْطَرَ. قَالَ: صَدَقَ وَأَنَا صَبَبْتُ لَهُ وضوءه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ والدارمي

2008. मादान बिन तल्हा से रिवायत है कि अबू दर्दा रज़ियल्लाहू अन्हु ने उन्हें हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उल्टी की तो आपने रोज़ा इफ़्तार कर लिया, रावी बयान करते हैं, मैं दमिश्क की मस्जिद में सोबान रज़ियल्लाहू अन्हु से मिला तो मैंने कहा कि अबू दर्दा रज़ियल्लाहू अन्हु ने मुझे हदीस बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उल्टी की तो आपने रोज़ा इफ़्तार कर लिया, उन्होंने कहा: उन्होंने (यानी अबू दर्दा) ने ठीक कहा है, और मैंने आपके लिए वज़ू का पानी डाला था।[2] **(हसन)**

(٢٠٠٩) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا لَا أُحْصِي يَتَسَوَّكُ وَهُوَ صَائِمٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

2009. आमिर बिन रबीअ रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, मैंने अनगिनत मर्तबा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रोज़े की हालत में मिस्वाक करते हुए देखा है।[3] **(ज़ईफ़)**

(٢٠١٠) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " اشتكيت عَيْنِي أَفَأَكْتَحِلُ وَأَنَا صَائِمٌ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ وَأَبُو عَاتِكَةَ الرَّاوِي يضعف

2010. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उसने कहा: मेरी आँखें दर्द करती हैं, क्या मैं रोज़े की हालत में सुरमा डाल लू? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"हां"।*** तिरमिज़ी और उन्होंने फ़रमाया: इसकी सनद क़वी नहीं, अबू आतिका रावी ज़ईफ़ है।[4] **(ज़ईफ़)**

---

1. सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (720), अबू दावूद (2380), इब्ने माजा (1676), दारमी (1736)
2. सनद हसन, अबू दावूद (2381), तिरमिज़ी (87)
3. सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (725), अबू दावूद (2364)
4. जईफ़, तिरमिजी (726)

2011. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी सहाबी से रिवायत है, उन्होंने कहा: मैंने मक़ामे अर्ज पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हालत रोज़े में प्यास या गर्मी की वजह से सर पर पानी डालते हुए देखा।[1] **(सही)**

(٢٠١١) وَعَنْ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْعَرْجِ يَصُبُّ عَلَى رَأْسِهِ الْمَاءَ وَهُوَ صَائِمٌ مِنَ الْعَطَشِ أَوْ مِنَ الْحَرِّ. رَوَاهُ مَالك

2012. शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बक़ी में एक आदमी के पास से गुज़रे जब कि वो पछने लगवा रहा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा हाथ थामे हुए थे और रमज़ान की अट्ठारह तारीख़ थी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"पछने लगाने और लगवाने वाले का रोज़ा टूट गया"।*** अबू दावूद, इब्ने माजा, दारमी शैखुल इमाम मुहियुस सुन्नाह ने फ़रमाया: और जिन बाज़ हज़रात ने रोज़े की हालत में पछने लगवाने की इजाज़त दी है, उन्होंने यह तावील की है कि पछने लगवाने वाला कमज़ोरी की वजह से इफ़्तार के क़रीब पहुच जाता है, जबकि पछने लगाने वाला इस चूसने की वजह से पेट में कोई चीज़ पहुचने से बच नहीं सकता।[2] **(सही)**

(٢٠١٢) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى رَجُلًا بِالْبَقِيعِ وَهُوَ يَحْتَجِمُ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِي لِثَمَانِي عَشْرَةَ خَلَتْ مِنْ رَمَضَانَ فَقَالَ: «أَفْطَرَ[ص: ٦٢٦] الْحَاجِمُ وَالْمَحْجُومُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ. قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَامُ مُحْيِي السُّنَّةِ رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ: وَتَأَوَّلَهُ بَعْضُ مَنْ رَخَّصَ فِي الْحِجَامَةِ: أَيْ تَعَرَّضَا لِلْإِفْطَارِ: الْمَحْجُومُ لِلضَّعْفِ وَالْحَاجِمُ لِأَنَّهُ لَا يَأْمَنُ مِنْ أَنْ يَصِلَ شَيْءٌ إِلَى جَوْفِهِ بمص الملازم

2013. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स किसी रुख्सत (सफ़र आदि) और मर्ज़ के बगैर रमज़ान का एक रोज़ा छोड़ दे तो फिर अगर वो पूरी ज़िन्दगी रोज़े रखता रहे तो इस एक दिन के रोज़े के अज्र ओ सवाब को नहीं पा सकता"।*** अहमद, तिरमिज़ी, अबू दावूद, इब्ने माजा,दारमी और इमाम बुख़ारी ने तर्जुमातुल्बाब में रिवायत किया है और

(٢٠١٣) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَفْطَرَ يَوْمًا مِنْ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ رُخْصَةٍ وَلَا مَرَضٍ لَمْ يَقْضِ عَنْهُ صَوْمُ الدَّهْرِ كُلِّهِ وَإِنْ صَامَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَةِ بَابٍ وَقَالَ

---

1. सही, मुअत्ता मालिक (660), अबू दावूद (2365)

2. सही, अबू दावूद (2369), इब्ने माजा (1681), दारमी (1737)

इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: मैंने मुहम्मद यानी इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह को फरमाते हुए सुना: मैं अबू मुतव्विस रावी को इस हदीस के अलावा नहीं जानता कि इसने कोई और हदीस भी रिवायत की हो।[1] **(ज़ईफ़)**

التِّرمِذِيُّ: سَمِعْتُ مُحَمَّدًا يَعْنِي الْبُخَارِيّ يقُول. أَبُو الطوس الرَّاوِي لَا أَعْرِفُ لَهُ غَيْرَ هَذَا الْحَدِيثِ

2014. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयाना करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"कितने ही रोज़ेदार हैं जिन्हें अपने रोज़े से सिर्फ प्यास हासिल होती है और कितने ही क़याम करने वाले हैं जिन्हें अपने क़याम से जागने के सिवा कुछ हासिल नहीं होता"।*** दारमी, और लकीत बिन सबिरा से मर्वी हदीस, सुनन अलवज़ू के बयान में ज़िक्र कर दी गयी है।[2] **(हसन)**

(٢٠١٤) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَمْ مِنْ صَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ صِيَامِهِ إِلَّا الظَّمَأُ وَكَمْ مِنْ قَائِمٍ لَيْسَ لَهُ من قِيَامه إِلَّا السهر» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

الْفَصْل الثَّالِث
तीसरा भाग

2015. अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"तीन चीज़ें रोज़ा नहीं तोड़ती, पछने, उल्टी और एहतेलाम"।***[3] **(ज़ईफ़)**

(٢٠١٥) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثٌ لَا يُفْطِرْنَ الصَّائِمَ الْحِجَامَةُ وَالْقَيْءُ وَالِاحْتِلَامُ» . رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَيْرُ مَحْفُوظٍ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ زيد الرَّاوِي يضعف فِي الحَدِيث

2016. साबित बुनाई रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं, अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहू अन्हु से पुछा गया, आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में रोज़ेदार के पछने लगाने को नापसंद

(٢٠١٦) وَعَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ قَالَ: سُئِلَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ: كُنْتُمْ تَكْرَهُونَ الْحِجَامَةَ لِلصَّائِمِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: لَا إِلَّا مِنْ أَجْلِ الضَّعْفِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1. सनद ज़ईफ़, अहमद (9002), तिरमिज़ी (723), अबू दावूद (2396, 2397), इब्ने माजा (1672), दारमी (1721), सही बुख़ारी हदीस नंबर 1935 से पहले तालीक़न

2. सनद हसन, दारमी (2723)

3. ज़ईफ़, तिरमिज़ी (719)

किया करते थे? उन्होंने फ़रमाया: नहीं, सिर्फ कमज़ोरी की वजह से।[1] **(सही)**

2017. इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि से मोअल्लक रिवायत है, उन्होंने कहा: इब्ने उमर रोज़े की हालत में पछने लगवाया करते थे, फिर इसे छोड़ दिया, फिर आप रात के वक़्त पछने लगवाते थे।[2]

2018. अता रहमतुल्लाह अलैहि बयान करते हैं, अगर कुल्ली करे, फिर मुह के पानी को गिरा दे तो फिर अगर वो अपना थूक और जो पानी इसके मुह में बाक़ी रह गया था निगल ले तो इसके लिए कोई नुक़सान नहीं पहुचेगा, अलबत्ता वो गोंद न चबाये, अगर गोंद का लुआब निगल ले तो मैं नहीं कहता कि वो रोज़ा तोड़ लेगा, लेकिन इसे इससे रोका जायेगा इमाम बुख़ारी ने इसे तर्जुमातुल्बाब में रिवायत किया है।[3]

(٢٠١٧) وَعَنِ الْبُخَارِيِّ تَعْلِيقًا قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ يَحْتَجِمُ وَهُوَ صَائِمٌ ثُمَّ تَرَكَهُ فَكَانَ يَحْتَجِمُ بِاللَّيْلِ

(٢٠١٨) وَعَن عَطاء قَالَ: إِن مضمض ثُمَّ أَفْرَغَ مَا فِي فِيهِ مِنَ الْمَاءِ لَا يضيره أَنْ يَزْدَرِدَ رِيقَهُ وَمَا بَقِيَ فِي فِيهِ وَلَا يَمْضُغُ الْعِلْكَ فَإِنِ ازْدَرَدَ رِيقَ الْعِلْكَ لَا أَقُولُ: إِنَّهُ يُفْطِرُ وَلَكِنْ يُنْهَى عَنْهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَةِ بَابٍ

1. बुख़ारी (1940)

2. मुअल्लक बुख़ारी हदीस नंबर 1938 के पहले

3. मुअल्लक बुख़ारी हदीस नंबर 1934 के बाद

بَاب صَوْمِ الْمُسَافِرِ
मुसाफ़िर के रोज़े का बयान

الْفَصْلُ الأول
पहला भाग

(٢٠١٩) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ حَمْزَةَ بْنَ عَمْرٍو الْأَسْلَمِيَّ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصُومُ فِي السَّفَرِ وَكَانَ كَثِيرَ الصِّيَامِ. فَقَالَ: «إِنْ شِئْتَ فَصم وَإِن شِئْتَ فَأَفْطر»
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2019. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती है कि हमजा बिन अम्र असलमी रज़ियल्लाहू अन्हु बहुत ज़्यादा रोज़े रखा करते थे, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा: क्या मैं सफ़र में रोज़ा रख लिया करू? आप ने फ़रमाया: ***"अगर तुम चाहो तो रोज़ा रखो और अगर तुम चाहो तो न रखो"।***[1] **(सही)**

(٢٠٢٠) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِسِتَّ عَشْرَةَ مَضَتْ مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ فَمِنَّا مَنْ صَامَ وَمِنَّا مَنْ أَفْطَرَ فَلَمْ يَعِبِ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ وَلَا الْمُفطِرُ عَلَى الصَّائِمِ. رَوَاهُ مُسلم

2020. अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, हम सोलाह (16) रमज़ान को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद के लिए निकले, हममें से कुछ ने रोज़ा रखा हुआ था और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा हुआ था, रोज़ेदार ने रोज़ा न रखने वालो पर और रोज़ा न रखने वालो ने रोज़ा रखने वालो पर कोई ऐतराज़ नहीं किया।[2] **(सही)**

(٢٠٢١) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَرَأَى زِحَامًا وَرَجُلًا قَدْ ظُلِّلَ عَلَيْهِ فَقَالَ: «مَا هَذَا؟» قَالُوا: صَائِمٌ. فَقَالَ: «لَيْسَ مِنَ الْبِرِّ الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ»
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2021. जाबिर रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़र में थे कि आपने देखा कि भीड़ में एक शख्स पर साया किया गया है, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुछा कि ***"ये क्या है?"*** उन्होंने कहा: यह रोज़ेदार है, आपने फ़रमाया: ***"सफ़र में रोज़ा रखना नेकी नहीं"।***[3] **(सही)**

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1943), मुस्लिम (2625)
2. मुस्लिम (2615)
3. मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1946), मुस्लिम (2612)

(٢٠٢٢) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السَّفَرِ فَمِنَّا الصَّائِمُ وَمِنَّا الْمُفْطِرُ فَنَزَلْنَا مَنْزِلًا فِي وم حَارٍّ فَسَقَطَ الصَّوَّامُونَ وَقَامَ الْمُفْطِرُونَ فَضَرَبُوا الْأَبْنِيَةَ وَسَقَوُا الرِّكَابَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَهَبَ الْمُفْطِرُونَ الْيَوْمَ بِالْأَجْرِ»
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2022. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र में थे, हममें से कुछ रोज़े से थे और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा हुआ था, एक सख़्त गरम दिन में हमने एक जगह पड़ाव डाला तो रोज़ेदार तो (निढ़ाल होकर) गिर पड़े, जबकि जिन लोगो ने रोज़ा नहीं रखा था वो खड़े हुए और उन्होंने ख़ेमे लगाये और सवारियों को पानी पिलाया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"आज रोज़ा न रखने वाले अज्र ले गये"।***[1] **(सही)**

(٢٠٢٣) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ عُسْفَانَ ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَرَفَعَهُ إِلَى يَدِهِ لِيَرَاهُ النَّاسُ فَأَفْطَرَ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ وَذَلِكَ فِي رَمَضَانَ. فَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ: قَدْ صَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَفْطَرَ. فَمن شَاءَ صَامَ وَمن شَاءَ أفطر
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2023. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए तो आपने रोज़ा रखा, यहाँ तक कि आप मक़ामे उस्फान पर पहुचे तो आपने पानी मंगाया और इसे हाथ से ऊँचा किया ताकि लोग इसे देख ले, आपने फिर अफ़्तार किया यहाँ तक कि मक्का में आये और यह सफ़र रमज़ान में था, इब्ने अब्बास फरमाते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (सफ़र में) रोज़ा रखा भी है और इफ़्तार भी किया है, तो जो चाहे रोज़ा रखे और जो चाहे न रखे।[2] **(सही)**

(٢٠٢٤) وَفِي رِوَايَة لمُسلم عَن جَابر رَضِي الله عَنهُ أَنه شرب بعد الْعَصْر

2024. सही मुस्लिम में जाबिर रज़ियल्लाहू अन्हु से मरवी रिवायत में है कि आपने असर के बाद (पानी) पिया।[3] **(सही)**

---

1. *मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (2890), मुस्लिम (2622)*
2. *मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1948), मुस्लिम (2604)*
3. *मुस्लिम (2611)*

الْفَصْلُ الثَّانِي

दूसरा भाग

(٢٠٢٥) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ الْكَعْبِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «إِن اللَّهَ وَضَعَ عَنِ الْمُسَافِرِ شَطْرَ الصَّلَاةِ وَالصَّوْمَ عَنِ الْمُسَافِرِ وَعَنِ الْمُرْضِعِ وَالْحُبْلَى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجه

2025. अनस बिन मालिक काअबी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"अल्लाह ने मुसाफिर से आधी नमाज़ ख़त्म कर दी जबकि मुसाफ़िर, दूध पिलाने वाली और हामिला खातून से रोज़ा ख़त्म कर दिया"।***[1] **(हसन)**

(٢٠٢٦) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْمُحَبَّقِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ لَهُ حَمُولَةٌ تَأْوِي إِلَى شِبْعٍ فَلْيَصُمْ رَمَضَانَ من حَيْثُ أَدْرَكَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2026. सलमा बिन मुहब्बिक़ रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाय: "जिस शख़्स के पास सवारी हो जो उसे आराम से मंजिल तक पहुचाये तो उसको रमज़ान का रोज़ा रखना चाहिए, जहा भी वो रमज़ान को पाए"।[2] **(ज़ईफ़)**

الْفَصْلُ الثَّالِث

तीसरा भाग

(٢٠٢٧) عَنْ جَابِرٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَامَ الْفَتْحِ إِلَى مَكَّةَ فِي رَمَضَانَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ كُرَاعَ الْغَمِيمِ فَصَامَ النَّاسُ ثُمَّ دَعَا بِقَدَحٍ مِنْ مَاءٍ فَرَفَعَهُ حَتَّى نَظَرَ النَّاسُ إِلَيْهِ ثُمَّ شَرِبَ فَقِيلَ لَهُ بَعْدَ ذَلِكَ إِنَّ بَعْضَ النَّاسِ قَدْ صَامَ. فَقَالَ: «أُولَئِكَ الْعُصَاةُ أُولَئِكَ الْعُصَاةُ» . رَوَاهُ مُسلم

2027. जाबिर रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़तह मक्का के साल रमज़ान में मक्का के लिए रवाना हुए तो आपने रोज़ा रखा, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक़ामे कुरा अल ग़मीम पर पहुचे, सहाबा किराम ने भी रोज़ा रखा हुआ था, फिर आपने पानी का प्याला मंगवाया, इसे ऊँचा किया यहाँ तक कि सहबा किराम ने इसे देख लिया, फिर आपने इसे पी लिया, इसके बाद आपको बताया गया कि कुछ लोगो ने रोज़ा रखा हुआ है (अभी तक इफ़्तार नहीं किया) तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"वो नाफ़रमान हैं, वो नाफ़रमान हैं"।***[3] **(सही)**

---

1. ***हसन, अबू दावूद (2408), तिरमिज़ी (715), नसाई (2276), इब्ने माजा (1667)***
2. ***सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2410, 2411)***
3. ***मुस्लिम (2610)***

(٢٠٢٨) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَائِمُ رَمَضَانَ فِي السَّفَرِ كَالْمُفْطِرِ فِي الْحَضَرِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2028. अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"सफ़र के दौरान रमज़ान का रोज़ा रखने वाला, (घर में) क़याम की हालत में रोज़ा न रखने वाले की तरह है"।***[1] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٢٩) وَعَن حَمْزَة بن عَمْرو السّلمِيّ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَجِدُ بِي قُوَّةً عَلَى الصِّيَامِ فِي السَّفَرِ فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ؟ قَالَ: «هِيَ رُخْصَةٌ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ فَمَنْ أَخَذَ بِهَا فَحَسَنٌ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَصُومَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسلم

2029. हमज़ा बिन अम्र असलमी रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल! मैं सफ़र के दौरान रोज़ा रखने की ताक़त रखता हूँ, तो क्या (सफ़र के दौरान रोज़ा रखने पर) मुझे गुनाह होगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"वो अल्लाह की तरफ से एक रुख्सत (छूट) है, जिसने इसे ले लिया तो उसने अच्छा किया और जो शख्स रोज़ा रखना चाहे तो उस पर कोई गुनाह नहीं"।***[2] **(सही)**

---

1. सनद ज़ईफ़, इब्ने माजा (1666)

2. *मुस्लिम (2629)*

بَاب الْقَضَاء
क़ज़ा का बयान
الْفَصْلُ الأول
पहला भाग

(٢٠٣٠) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ عَلَيَّ الصَّوْمُ مِنْ رَمَضَانَ فَمَا أَسْتَطِيعُ أَنْ أَقْضِيَ إِلَّا فِي شَعْبَانَ. قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ: تَعْنِي الشّغل من النَّبِي أَو بِالنَّبِيّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2030. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, मुझ पर रमज़ान के रोज़े होते तो मैं सिर्फ शाबान में इनकी क़ज़ा दे सकती थी याहया बिन सईद बयान करते हैं, इनकी मुराद यह है कि (क़ज़ा में देर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मसरूफ़ियत की वजह से थी।[1] **(सही)**

(٢٠٣١) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ لِلْمَرْأَةِ أَنْ تَصُومَ وَزَوْجُهَا شَاهِدٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ وَلَا تَأْذَنَ فِي بَيْتِهِ إِلَّا بِإِذْنِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

2031. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"किसी औरत के लिए, अपने शौहर के पास होते हुए उसकी इजाज़त के बिना नफली रोज़ा रखना जायज़ नहीं, और उसकी इजाज़त के बिना किसी को उसके घर में आने की इजाज़त न दे"।***[2] **(सही)**

(٢٠٣٢) وَعَنْ مُعَاذَةَ الْعَدَوِيَّةِ أَنَّهَا قَالَتْ لِعَائِشَةَ: مَا بَالُ الْحَائِضِ تَقْضِي الصَّوْمَ وَلَا تَقْضِي الصَّلَاةَ؟ قَالَتْ عَائِشَةُ: كَانَ يُصِيبُنَا ذَلِكَ فَنُؤْمَرُ بِقَضَاءِ الصَّوْمِ وَلَا نُؤْمَرُ بِقَضَاءِ الصَّلَاةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2032. मुआज़तलअदविया रहमतुल्लाह अलैहि से रिवायत है कि उन्होंने आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से पूछा: हाइज़ा (हैज़ वाली औरत) का क्या मामला है कि वो रोजों की क़ज़ा देती है और नमाज़ की क़ज़ा नहीं देती? आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा ने फ़रमाया: हम भी इससे दो चार होती थी तो हमें रोज़े की क़ज़ा का हुक्म दिया जाता था जबकि नमाज़ की क़ज़ा का हुक्म नहीं दिया जाता था।[3] **(सही)**

---

1. *मुत्तफ़िक़ अलैह बुख़ारी (1950), मुस्लिम (2687)*
2. *मुस्लिम (2370)*
3. *मुस्लिम (763)*

2033. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स फौत हो जाए और उसके ज़िम्मे रोज़े हो तो उसकी तरफ से उसका वारिस रोज़े रखेगा"।***[1] **(सही)**

(٢٠٣٣) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صَوْمٌ صَامَ عَنْهُ وليه
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

الْفَصْلُ الثَّانِي
दूसरा भाग

2034. नाफे इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत करते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स मर जाए और उसके ज़िम्मे रमज़ान के रोज़े हों तो उसकी तरफ से हर रोज़े के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाया जाये"।*** तिरमिज़ी और उन्होंने फ़रमाया: दुरुस्त बात यह है की यह अब्दुल्लाह बिन उमर पर मौक़ूफ़ है।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٣٤) عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامُ شَهْرِ رَمَضَانَ فَلْيُطْعَمْ عَنْهُ مَكَانَ كُلِّ يَوْمٍ مِسْكِينٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: وَالصَّحِيحُ أنه مَوْقُوف على ابْن عمر
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

الْفَصْلُ الثَّالِث
तीसरा भाग

2035. इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं, उन्हें यह ख़बर पहुची है की इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हु से मसला पुछा गया था, क्या कोई शख़्स किसी दुसरे की तरफ से रोज़ा रख सकता है या कोई किसी दुसरे शख़्स की तरफ से नमाज़ पढ़ सकता है? उन्होंने फरमाया: कोई किसी की तरफ से रोज़ा नहीं रख सकता है न कोई किसी की तरफ से नमाज़ पढ़ सकता है।[3] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٣٥) عَنْ مَالِكٍ بَلَغَهُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يُسْأَلُ: هَلْ يَصُومُ أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ أَوْ يُصَلِّي أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ؟ فَيَقُولُ: لَا يَصُومُ أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ. وَلَا يُصَلِّي أَحَدٌ عَنْ أحد. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

---

1. *मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1952), मुस्लिम (2692)*
2. *सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (718)*
3. *सनद ज़ईफ़, मुअत्ता मालिक (681)*

بَابُ صِيَامِ التَّطَوُّعِ
नफ्ली रोज़ो का बयान
الْفَصْلُ الأول
पहला भाग

2036. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफ़्ली रोज़े (लगातार) रखते रहते यहाँ तक कि हम कहते कि आप रोज़ा रखना नहीं छोड़ेंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ा रखना छोड़ देते यहाँ तक कि हम कहते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ा नहीं रखेंगे और मैंने रसूलुल्लाह को रमज़ान के महीने के सिवा किसी और महीने के पूरे रोज़े रखते हुए नही देखा और मैंने आपको शाबान के अलावा किसी और महीने में इतने ज़्यादा रोज़े रखते नहीं देखा। एक दूसरी रिवायात में है, आप रज़ियल्लाहू अन्हा बयाना करती है: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरा शाबान रोज़े रखा करते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शाबान में ज़्यादा रोज़े रखा करते थे।[1] **(सही)**

(٢٠٣٦) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ حَتَّى نَقُولَ: لَا يُفْطِرُ وَيُفْطِرُ حَتَّى نَقُولَ: لَا يَصُومُ وَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَكْمل صِيَام شهر قطّ إِلَّا رَمَضَانَ وَمَا رَأَيْتُهُ فِي شَهْرٍ أَكْثَرَ مِنْهُ صِيَامًا فِي شَعْبَانَ وَفِي رِوَايَةٍ قَالَتْ: كَانَ يَصُوم شعْبَان كُله وَكَن يَصُوم شعْبَان إِلَّا قَلِيلا
(مُتَّفق عَلَيْهِ)

2037. अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ बयान करते हैं, मैंने आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से कहा: क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरा महीना रोज़े रखा करते थे? उन्होंने फ़रमाया: मैं आपके बारे में नहीं जानती कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान के अलावा किसी और महीने के पूरे रोज़े रखे हों, और ऐसे भी नहीं कि आपने किसी महीने में कोई रोज़ा न रखा हो बल्कि आप हर महीना कुछ रोज़े रखते थे यहाँ तक कि आप वफात पा गये।[2] **(सही)**

(٢٠٣٧) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: أَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُوم شهرا كُله؟ قَالَ: مَا عَلِمْتُهُ صَامَ شَهْرًا كُلَّهُ إِلَّا رَمَضَانَ وَلَا أَفْطَرَهُ كُلَّهُ حَتَّى يَصُومَ مِنْهُ حَتَّى مضى لسبيله. رَوَاهُ مُسلم

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1969), मुस्लिम (2721,2722)
2. *मुस्लिम (2718)*

2038. इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहू अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने उनसे पूछा या किसी और आदमी ने पूछा और इमरान रज़ियल्लाहू अन्हु सुन रहे थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"ए अबू फ़ुलां! क्या तुमने इस महीने के आख़िर में रोज़े नहीं रखे?"*** उसने कहा: नहीं। आपने फ़रमाया: ***"जब तुम रमज़ान के रोज़े रखना छोड़ दो तो फिर दो दिन के रोज़े रख लेना"।***[1] **(सही)**

(٢٠٣٨) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ سَأَلَهُ أَوْ سَأَلَ رَجُلًا وَعِمْرَانَ يَسْمَعُ فَقَالَ: «يَا أَبَا فُلَانٍ أَمَا صُمْتَ مِنْ سَرَرِ شَعْبَانَ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَإِذَا أَفْطَرْتَ فَصُمْ يَوْمَيْنِ»
(مُتَّفق عَلَيْهِ)

2039. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"रमज़ान के बाद अल्लाह के महीने मुहर्रम का रोज़ा बेहतरीन रोज़ा है, और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद रात कि नमाज़ (यानी तहज्जुद) बेहतरीन नमाज़ है"।***[2] **(सही)**

(٢٠٣٩) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ شَهْرُ اللَّهِ الْمُحَرَّمِ وَأَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْفَرِيضَةِ صَلَاةُ اللَّيْلِ» . رَوَاهُ مُسلم

2040. इब्ने अब्बास रज़ियाल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस दिन यौमे आशूरा (मुहर्रम की दसवी तारीख़) और इस महीने यानी रमज़ान के रोज़ो के सिवा किसी और दिन और किसी और महीने के रोज़े का इतना ज़्यादा ख़याल करते हुए नहीं देखा और आपने इस (आशूरा के) दिन को बाक़ी दिनों पर फ़ज़ीलत दी।[3] **(सही)**

(٢٠٤٠) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَحَرَّى صِيَامَ يَوْمٍ فَضَّلَهُ عَلَى غَيْرِهِ إِلَّا هَذَا الْيَوْمَ: يَوْمَ عَاشُورَاءَ وَهَذَا الشَّهْرُ يَعْنِي شَهْرَ رَمَضَان
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2041. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आशूरा का रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया तो उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल! यह तो वो दिन है कि यहूद और नसारा (इसाई) इसकी इज्ज़त करते हैं, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

(٢٠٤١) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: حِينَ صَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ عَاشُورَاءَ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ يَوْمٌ يُعَظِّمُهُ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَئِنْ بَقِيتُ إِلَى قَابِلٍ لأصومن التَّاسِعَ» رَوَاهُ مُسلم

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1983), मुस्लिम (2751)

2. मुस्लिम (2755)

3. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2006), मुस्लिम (2662)

"अगर मैं अगले साल तक जिंदा रहा तो मैं नवी (मुहर्रम) का भी रोज़ा रखूंगा"। [1] **(सही)**

2042. उम्मे फ़ज़्ल बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अरफ़ा के दिन रोज़ा रखने के बारे में कुछ लोगो के बीच इख़्तिलाफ हो गया, कुछ लोगो ने कहा कि अरफ़ा के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोज़ा है, कुछ लोगो ने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़े से नहीं (इस बात कि तहक़ीक़ के लिए) मैंने दूध का प्याला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरफ़ात के मैदान में अपने ऊंट पर सवार थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूध पी लिया।[2] **(सही)**

(٢٠٤٢) وَعَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ: أَنَّ نَاسًا تَمَارَوْا عِنْدَهَا يَوْمَ عَرَفَةَ فِي صِيَامِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: هُوَ صَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَيْسَ بِصَائِمٍ فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ بقدح لبن وَهُوَ وَاقِف عل بعيره بِعَرَفَة فشربه

(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2043. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (ज़िल हिज्जा के) दस दिनों में कभी रोज़े से नहीं देखा।[3] **(सही)**

(٢٠٤٣) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَائِمًا فِي الْعشْر قطّ.

رَوَاهُ مُسلم

2044. अबू क़तादा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उसने पूछा: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोज़ा कैसे रखते है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी बात से नाराज़ हुए. जब उमर रज़ियल्लाहू अन्हु ने आपकी नाराज़गी देखी तो कहा: हम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने पर राज़ी हैं, हम

(٢٠٤٤) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ كَيْفَ تَصُومُ فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَوْله. فَلَمَّا رأى عمر رَضِي الله عَنْهُم غَضَبَهُ قَالَ رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ غَضَبِ اللَّهِ وَغَضب رَسُوله فَجعل عمر رَضِي الله عَنْهُم يُرَدِّدُ هَذَا الْكَلَامَ حَتَّى سَكَنَ غَضَبُهُ فَقَالَ عمر يَا رَسُول الله كَيفَ بِمن يَصُومُ الدَّهْرَ كُلَّهُ قَالَ:

1. मुस्लिम (2666,2667)

2. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1988), मुस्लिम (2632)

3. मुस्लिम (2789)

«لَا صَامَ وَلَا أَفْطَرَ» . أَوْ قَالَ: «لَمْ يَصُمْ وَلَمْ يُفْطِرْ» . قَالَ كَيْفَ مَنْ يَصُومُ يَوْمَيْنِ وَيُفْطِرُ يَوْمًا قَالَ: «وَيُطِيقُ ذَلِكَ أَحَدٌ» . قَالَ كَيْفَ مَنْ يَصُوم يَوْمًا وَيفْطر يَوْمًا قَالَ: «ذَاك صَوْم دَاوُد عَلَيْهِ السَّلَام» قَالَ كَيْفَ مَنْ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمَيْنِ قَالَ: «وَدِدْتُ أَنِّي طُوِّقْتُ ذَلِكَ» . ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاث مِنْ كُلِّ شَهْرٍ وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ فَهَذَا صِيَامُ الدَّهْرِ كُلِّهِ صِيَامُ يَوْمِ عَرَفَةَ أَحْتَسِبُ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ وَالسَّنَةَ الَّتِي بَعْدَهُ وَصِيَامُ يَوْمِ عَاشُورَاءَ أَحْتَسِبُ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ» . رَوَاهُ مُسلم

अल्लाह और उसके रसूल कि नाराज़गी से अल्लाह कि पनाह चाहते हैं, उमर रज़ियल्लाहू अन्हु बार बार यह बात दोहराते रहे यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुस्सा जाता रहा तो उमर रज़ियल्लाहू अन्हु ने कहा: अल्लाह के रसूल! उस शख़्स की क्या हालत है जो हमेशा रोज़े रखता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"ना उसने रोज़ा रखा ना अफ्तार किया"*** यानी उसको रोज़ा रखने का सवाब नहीं मिलेगा और ना अफ्तार किया यानी कुछ खाना भी नही खाया भूखा प्यासा रहा। फिर हज़रत उमर ने पूछा: उस शख़्स का क्या हाल है जो दो दिन रोज़ा रखता है और एक दिन नहीं रखता? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"इसकी ताक़त कौन रखता है?"*** फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहू अन्हु ने पूछा: उसका क्या हाल है जो एक दिन रोज़ा रखता है और एक दिन नहीं रखता? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"यह तो दावूद अलैहिस्सलाम का रोज़ा है"*** और फिर उन्होंने अर्ज़ किया: उस शख़्स क्या हाल है जो एक दिन रोज़ा रखता है और दो दिन नहीं रखता? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"मैं चाहता हूँ कि मुझे इसकी ताक़त मिल जाये"***, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"हर महीने (अय्यामे बीज़ के यानी 13,14 और 15) तीन रोज़े और एक रमज़ान के रोज़ो से लेकर दूसरे रमज़ान के रोज़े यह अमल हमेशा रोज़ा रखने जैसा है जबकि यौमे अरफ़ा (नौ ज़िल हज) के रोज़े के बारे में अल्लाह से उम्मीद करता हूँ कि वो पिछले और अगले साल के गुनाह मिटा देगा और यौमे आशूरा के रोज़े के बारे में मैं अल्लाह से उम्मीद करता हूँ कि वो पिछले साल के गुनाह मिटा देगा"***।[1] **(सही)**

1. मुस्लिम (2746)

2045. अबू क़तादा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीर (सोमवार) के रोज़े के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया: ***"यही मेरा पैदाइश का दिन है और यही यौमे नबूवत (यानी इसी रोज़ मुझ पर वही नाज़िल कि गयी)"।***[1] **(सही)**

(٢٠٤٥) وَعَن أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَوْمِ الِاثْنَيْنِ فَقَالَ: «فِيهِ وُلِدْتُ وَفِيهِ أُنْزِلَ عَلَيَّ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2046. मुआज़तलअदविया रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से पूछा: क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर महीने तीन दिन रोज़ा रखा करते थे? उन्होंने फ़रमाया: हां, फिर मैंने उनसे पूछा: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम महीने के कौन से दिन रोज़ा रखा करते थे? उन्होंने फ़रमाया: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बात कि परवाह नहीं किया करते थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम महीने के कौन से दिनों में रोज़ा रखेंगे।[2] **(सही)**

(٢٠٤٦) وَعَنْ مُعَاذَةَ الْعَدَوِيَّةِ أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ: أَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ فَقُلْتُ لَهَا: مِنْ أَيِّ أَيَّامِ الشَّهْرِ كَانَ يَصُومُ؟ قَالَتْ: لَمْ يَكُنْ يُبَالِي مِنْ أَيِّ أَيَّام الشَّهْر يَصُوم. رَوَاهُ مُسلم

2047. अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो शख़्स रमज़ान के रोज़े रखे, फिर इसके बाद ***शव्वाल के छः रोज़े रखे तो वो ऐसा है जैसे उसने ज़माने भर के (मुसलसल) रोज़े रखे"।***[3] **(सही)**

(٢٠٤٧) وَعَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ أَتْبَعَهُ سِتًّا مِنْ شَوَّال كَانَ كصيام الدَّهْر» . رَوَاهُ مُسلم

2048. अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईद उल फ़ित्र और ईद-उल-ज़ुहा के दिन रोज़ा रखने से मना फरमाया।[4] **(सही)**

(٢٠٤٨) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَوْمِ يَوْمِ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

---

1. मुस्लिम (2750)
2. मुस्लिम (2744)
3. मुस्लिम (2758)
4. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1991), मुस्लिम (2674)

(٢٠٤٩) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا صَوْمَ فِي يَوْمَيْنِ: الْفطر وَالضُّحَى "
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2049. अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"ईद-उल-फित्र और ईदुज्जुहा के दिन रोज़ा रखना जायज़ नहीं"।***[1] **(सही)**

(٢٠٥٠) وَعَنْ نُبَيْشَةَ الْهُذَلِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيَّامُ التَّشْرِيقِ أَيَّامُ أَكل وَشرب وَذكر الله» . رَوَاهُ مُسلم

2050. नुबैशा हुज़ली रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"अय्यामे तशरीक (11,12,13 ज़िल हिज्जा) खाने पीने और अल्लाह का ज़िक्र करने के दिन हैं"।***[2] **(सही)**

(٢٠٥١) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَصُومُ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَّا أَن يَصُوْم قبله أَو يَصُوْم بعده»
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2051. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"तुम में से कोई सिर्फ जुमे के दिन रोज़ा ना रखे सिवाए इसके कि वो इस से पहले या इसके बाद रोज़ा रखे"।***[3] **(सही)**

(٢٠٥٢) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَخْتَصُّوا لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ بِقِيَامٍ مِنْ بَيْنِ اللَّيَالِي وَلَا تَخْتَصُّوا يَوْمَ الْجُمُعَةِ بِصِيَامٍ مِنْ بَيْنِ الْأَيَّامِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ فِي صَوْمٍ يَصُومهُ أحدكُم» . رَوَاهُ مُسلم

2052. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"तुम रातों में से सिर्फ जुमे की रात को क़याम करने के लिए ख़ास ना करो और ना दिनों में से जुमे के दिन को रोज़े के लिए ख़ास करो सिवाए इसके कि वह (जुम्मे का दिन) तुम में से किसी के रोज़े रखने के दिन में आ जाए"।***[4] **(सही)**

(٢٠٥٣) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بَعَّدَ اللَّهُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ سَبْعِينَ خَرِيفًا»
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2053. अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"जो शख्स दौराने जिहाद एक दिन रोज़ा रखता है तो अल्लाह उस शख़्स को सत्तर साल की दूरी के बराबर जहन्नम से दूर कर देता है"।***[5] **(सही)**

---

1. *मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1197), मुस्लिम (2673)*
2. *मुस्लिम (2677)*
3. *मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1985), मुस्लिम (2683)*
4. *मुस्लिम (2684)*
5. *मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2840), मुस्लिम (2713)*

2054. अबुदुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे फ़रमाया: ***"अब्दुल्लाह! मुझे बताया गया है कि तुम दिन को रोज़ा रखते हो और रात को क़याम करते हो"।*** मैंने कहा जी हां अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया: ***"ऐसे ना किया करो रोज़ा रखा करो और कभी ना भी रखा करो, रात को क़याम भी किया करो और सोया भी करो, क्योंकि तेरे जिस्म का तुझ पर हक़ है, तेरी आँख का तुझ पर हक़ है, तेरी बीवी (पत्नी) का तुझ पर हक़ है, और तेरे मेहमान का तुझ पर हक़ है, लगातार रोज़े रखने वाले का कोई रोज़ा नहीं। हर महीने तीन दिन रोज़े रखना ज़माने भर के रोज़े रखने के बराबर है, हर महीने तीन दिन रोज़ा रखा करो और हर महीने क़ुरान मजीद मुक़म्मल किया करो"।*** मैंने कहा: मैं इससे ज़्यादा की ताक़त रखता हूं। आपने फरमाया: ***"बेहतरीन रोज़े दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े रख लिया करो, एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ़्तार, सात दिन में क़ुरान मजीद मुक़म्मल करो और इसपर इज़ाफा ना करो"।***[1] **(सही)**

(٢٠٥٤) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَصُومُ النَّهَارَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ؟» فَقُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: «فَلَا تَفْعَلْ صُمْ وَأَفْطِرْ وَقُمْ وَنَمْ فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا. لَا صَامَ مَنْ صَامَ الدَّهْرَ. صَوْمُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ صَوْمُ الدَّهْرِ كُلِّهِ. صُمْ كُلَّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَاقْرَأِ الْقُرْآنَ فِي كُلِّ شَهْرٍ» . قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: " صُمْ أَفْضَلَ الصَّوْمِ صَوْمَ دَاوُدَ: صِيَامُ يَوْمٍ وَإِفْطَارُ يَوْمٍ. وَاقْرَأْ فِي كُلِّ سَبْعِ لَيَالٍ مَرَّةً وَلَا تَزِدْ عَلَى ذَلِكَ"
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

الْفَصْلُ الثَّانِي

दूसरा भाग

2055. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पीर (सोमवार) और जुमेरात के दिन रोज़ा रखा करते थे।[2] **(सही)**

(٢٠٥٥) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيس. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِي

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (1975), मुस्लिम (2743)

2. सनद सही, तिरमिज़ी (745), नसाई (2363)

2056. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"पीर और जुमेरात के दिन आमाल पेश किए जाते हैं, लिहाज़ा मैं पसंद करता हूं कि मेरा अमल ऐसे हाल में पेश किया जाए कि मैं रोज़े से हूं"।***[1] **(हसन)**

(٢٠٥٦) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيسِ فَأُحِبُّ أَنْ يُعْرَضَ عَمَلِي وَأَنَا صَائِمٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2057. अबू ज़र रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"ए अबू ज़र! जब तुम महीने में तीन रोज़े रखो तो 13 14 और 15 का रोज़ा रखो"।***[2] **(हसन)**

(٢٠٥٧) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ إِذَا صُمْتَ مِنَ الشَّهْرِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَصُمْ ثَلَاثَ عَشْرَةَ وَأَرْبَعَ عَشْرَةَ وَخَمْسَ عَشْرَةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2058. अब्दुल्ला बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर महीने के शुरू में तीन रोज़े रखा करते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कम ही जुमे के दिन रोज़ा छोड़ा करते थे। तिरमिज़ी, नसाई और अबू दाऊद ने तीन दिन तक रिवायत किया है।[3] **(हसन)**

(٢٠٥٨) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ مِنْ غُرَّةِ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَقَلَّمَا كَانَ يفْطر يَوْم الْجُمُعَة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ إِلَى ثَلَاثَة أَيَّام

2059. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी महीने हफ़्ता, इतवार और पीर का रोज़ा रखते तो दूसरे महीने मंगल, बुध, जुमेरात का रोज़ा रखते थे।[4] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٥٩) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ مِنَ الشَّهْرِ السَّبْتَ وَالْأَحَدَ وَالِاثْنَيْنِ وَمِنَ الشَّهْرِ الآخر الثُّلَاثَاء وَالْأَرْبِعَاء وَالْخَمِيس. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2060. उम्मे सलमा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे हुक्म फ़रमाया करते थे कि मैं हर महीने तीन रोज़े रखूं। इनकी शुरूआत पीर से हो या जुमेरात से।[5] **(सही)**

(٢٠٦٠) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُنِي أَنْ أَصُومَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ أَوَّلُهَا الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيس. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

---

1. सनद हसन, तिरमिज़ी (747), इसकी असल मुस्लिम (2565) मे है

2. सनद हसन, तिरमिज़ी (761), नसाई (2425), सही इब्ने ख़ुज़ैमा (2128), सही इब्ने हिब्बान (943,944)

3. सनद हसन, तिरमिज़ी (742), नसाई (2370), अबू दावूद (2450), सही इब्ने ख़ुज़ैमा (2129), इब्ने हिब्बान (3637)

4. सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (746)

5. सही, अबू दावूद (2452), नसाई (2421)

(٢٠٦١) وَعَن مُسلم الْقرشِي قَالَ: سَأَلت أَوْ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن صِيَام الدَّهْر فَقَالَ: «إِنَّ لِأَهْلِكَ عَلَيْكَ حَقًّا صُمْ رَمَضَانَ وَالَّذِي يَلِيهِ وَكُلَّ أَرْبِعَاءَ وَخَمِيسٍ فَإِذًا أَنْتَ قَدْ صُمْتَ الدَّهْرَ كُلَّهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

2061. मुस्लिम क़ुर्शी रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मसला पूछा या आपसे हमेशा रोज़ा रखने के बारे पूछा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"बेशक तेरे घरवालों का तुझ पर हक़ है, रमज़ान और उसके साथ वाले महीने और हर बुध जुमेरात का रोज़ा रखा कर, अगर तुमने ऐसा कर लिया तो तुमने (हुक्मन) ज़माने भर के रोज़े रखे"।***[1] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٦٢) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَهَى عَنْ صَوْمِ يَوْمِ عَرَفَةَ بِعَرَفَةَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2062. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरफ़ा के दिन मैदाने अराफ़ात में रोज़ा रखने से मना फरमाया।[2] **(हसन)**

(٢٠٦٣) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُسْرٍ عَنْ أُخْتِهِ الصَّمَّاءِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَصُومُوا يَوْمَ السَّبْتِ إِلَّا فِيمَا افْتُرِضَ عَلَيْكُمْ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ أَحَدُكُمْ إِلَّا لِحَاءَ عِنَبَةٍ أَوْ عُودَ شَجَرَةٍ فَلْيَمْضُغْهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

2063. अब्दुल्ला बिन बुसर रज़ियल्लाहू अन्हु अपनी बहन सम्मा रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"हफ्ते के दिन रोज़ा ना रखो सिवाए इसके कि कोई ऐसा रोज़ा आ जाए जो तुम पर फ़र्ज़ किया गया हो। अगर तुम में से कोई अंगूर का छिलका या किसी तरह की लकड़ी के सिवा कुछ ना पाए तो उसे ही चबा ले"।***[3] (ताकि सिर्फ हफ्ते का रोज़ा साबित ना हो) । **(हसन)**

(٢٠٦٤) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ جَعَلَ اللَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ خَنْدَقًا كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2064. अबू उमामा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स राहे जिहाद में एक रोज़ा रखता है तो अल्लाह उसके और जहन्नम के दरमियान ज़मीन ओ आसमान के बराबर की दूरी का एक खंदक (गढ़्ढा) बना देता है"।***[4] **(हसन)**

---

1. सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2432), तिरमिज़ी (748)

2. सनद हसन, अबू दावूद (2440) इब्ने माजा (1732)

3. सनद हसन, अहमद (27651), अबू दावूद (2421), तिरमिज़ी (744), इब्ने माजा (1726), दारमी (1756)

4. सनद हसन, तिरमिज़ी (1624)

2065. आमिर बिन मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“ठंडी में रोज़ा ग़नीमतहै”।***[1] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٦٥) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغَنِيمَةُ الْبَارِدَةُ الشِّتَاءِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ مُرْسل

2066. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से मरवी हदीस ما من أيام أحب إلى الله क़ुरबानी के बाब में ज़िक्र की गयी है।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٦٦) وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «مَا مِنْ أَيَّامٍ أحب إِلَى الله» فِي بَاب الْأُضْحِية

الْفَصْلُ الثَّالِث
तीसरा भाग

2067. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाये तो आपने यहूदियों को आशूरा के दिन का रोज़ा रखते हुए देखा तो रसूलुल्लाह ने उनसे पूछा: ***“यह कौन सा दिन है जिसका तुम रोज़ा रखते हो?”*** उन्होंने कहा, यह एक बड़ा दिन है, अल्लाह ने इस दिन मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को निजात दी जबकि फ़िरऔन और उसकी क़ौम को डुबो दिया, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने शुक्र के तौर पर इस दिन का रोज़ा रखा तो हम भी इस दिन का रोज़ा रखते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“हम तुम्हारी निस्बत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़्यादा हक़दार हैं”*** । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दिन का रोज़ा रखा और इसका रोज़ा रखने का हुक्म दिया।[3] **(सही)**

(٢٠٦٧) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدِمَ الْمَدِينَةَ فَوَجَدَ الْيَهُودَ صِيَامًا يَوْمَ عَاشُورَاءَ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا هَذَا الْيَوْمُ الَّذِي تَصُومُونَهُ؟» فَقَالُوا: هَذَا يَوْمٌ عَظِيمٌ: أَنْجَى اللَّهُ فِيهِ مُوسَى وَقَوْمَهُ وَغَرَّقَ فِرْعَوْنَ وَقَوْمَهُ فَصَامَهُ مُوسَى شُكْرًا فَنَحْنُ نَصُومُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَنَحْنُ أَحَقُّ وَأَوْلَى بِمُوسَى مِنْكُمْ» فَصَامَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَ بصيامه
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2068. उम्मे सलमा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़्यादातर हफ़्ता और इतवार के दिन रोज़ा रखा करते थे और आप फ़रमाया करते थे: “यह दो दिन मुशरिको के ईद के दिन हैं, लिहाज़ा मैं इनकी मुख़ालफत करना पसंद करता हूँ”।[4] **(हसन)**

(٢٠٦٨) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ يَوْمَ السَّبْتِ وَيَوْمَ الْأَحَدِ أَكْثَرَ مَا يَصُومُ مِنَ الْأَيَّامِ وَيَقُولُ: «إِنَّهُمَا يَوْمَا عِيدٍ لِلْمُشْرِكِينَ فَأَنَا أُحِبُّ أَن أخالفهم» . رَوَاهُ أَحْمد

---

1. सनद ज़ईफ़, अहमद (19167) तिरमिज़ी (797), सही सनद से मौक़ूफ़न अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से बैहक़ी (4/297) ने नक़ल किया है।
2. ज़ईफ़, तिरमिज़ी (757), इब्ने माजा (1728)
3. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2004), मुस्लिम (2656)
4. सनद हसन, अहमद (27286)

2069. जाबिर बिन समरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आशूरा के दिन का रोज़ा रखने का हमें हुक्म फ़रमाया करते थे, इसकी हमें तवज्जो दिलाया करते थे और इसके बारे में हमें नसीहत फ़रमाया करते थे, जब रमज़ान फ़र्ज़ किया गया तो आपने इसके बारे में हमें न हुक्म फ़रमाया न मना किया और न ही हमें इसके बारे में नसीहत फरमाई।[1] **(सही)**

(٢٠٦٩) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ بِصِيَامِ يَوْمِ عَاشُورَاءَ وَيَحُثُّنَا عَلَيْهِ وَيَتَعَاهَدُنَا عِنْدَهُ فَلَمَّا فُرِضَ رَمَضَانُ لَمْ يَأْمُرْنَا وَلَمْ يَنْهَنَا عَنْهُ وَلم يتعاهدنا عِنْده. رَوَاهُ مُسلم

2070. हफ़्सा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं चार काम हैं जिन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छोड़ा नहीं करते थे आशूरा का रोज़ा, ज़िल हिज्जा के दस रोज़े, हर महीने तीन रोज़े और फज्र से पहले दो रकआते।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٧٠) وَعَنْ حَفْصَةَ قَالَتْ: أَرْبَعٌ لَمْ يَكُنْ يَدَعُهُنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صِيَامُ عَاشُورَاءَ وَالْعَشْرِ وَثَلَاثَةُ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ وَرَكْعَتَانِ قبل الْفجْر» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

2071. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक़ाम और सफर में अय्यामे बीज़ (13,14और15 तारीख) का रोज़ा नहीं छोड़ते थे।[3] **(हसन)**

(٢٠٧١) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُفْطِرُ أَيَّامَ الْبيض فِي حضر وَلَا فِي سفر. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

2072. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***“हर चीज की ज़कात है जबकि जिस्म की ज़कात रोज़ा है”।***[4] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٧٢) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِكُلِّ شَيْءٍ زَكَاةٌ وَزَكَاةُ الْجَسَدِ الصَّوْمُ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2073. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पीर और जुमेरात का रोजा रखा करते थे। आपसे पूछा गया अल्लाह के रसूल! आप पीर और जुमेरात का रोज़ा रखते हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

(٢٠٧٣) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يَصُومُ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيسِ. فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ تَصُومُ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ

1. *मुस्लिम (2652)*
2. ***सनद ज़ईफ़, नसाई (2418)***
3. ***सनद हसन, नसाई (2347)***
4. ***सनद ज़ईफ़, इब्ने माजा (1745)***

फरमाया: ***"बेशक पीर और जुमेरात के दिन अल्लाह आपस में ताल्लुक तोड़ने वाले दो आदमियों के सिवा हर मुसलमान को बख्श देता है और फ़रमाता है: इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि यह दोनों आपस में सुलह कर ले"।***[1] **(हसन)**

2074. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जो शख़्स अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर एक रोज़ा रखता है तो अल्लाह उसे जहन्नम से इस क़द्र दूर कर देता है जैसे एक उड़ने वाला बचपन की उम्र से उड़ना शुरू करें और बूढ़ा होने तक उड़ता रहे यहाँ तक कि वह फ़ौत हो जाए"।*** (वह इस सारी जिंदगी में जितना फासला तय करता है अल्लाह उस शख़्स को इतनी मुसाफिअत जहन्नम से दूर कर देता है)।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٧٤) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ بَعَّدَهُ اللَّهُ مِنْ جَهَنَّمَ كَبُعْدِ غُرَابٍ طَائِرٍ وَهُوَ فرخ حَتَّى مَاتَ هرما» . رَوَاهُ أَحْمد

2075. इमाम बैहक़ी ने इसे सलमा बिन कैस से शोअबुल ईमान में रिवायत किया है।[3] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٧٥) وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنْ سَلَمَةَ بن قيس

---

1. सनद हसन, अहमद (8343), इब्ने माजा (1740)

2. सनद ज़ईफ़, अहमद (10820)

3. सनद ज़ईफ़, शोअबुल ईमान बैहक़ी (3590)

بَابُ

पिछले भाग के बारे में मुख्तलिफ (विभिन्न) मसाइल

اَلْفَصْلُ الأول

पहला भाग

2076. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन मेरे पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: ***"क्या तुम्हारे पास (खाने के लिए) कोई चीज है?"*** हमने कहा नहीं, आपने फ़रमाया: ***"मैं फिर रोज़े से हूं"*** फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी दिन हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हमने कहा, अल्लाह के रसूल! हमें हैस (खजूर घी और पनीर से तैयार किया गया हलवा) तोहफे में दिया गया है, आपने फ़रमाया: ***"मुझे दिखाओ मैंने सुबह रोज़ा रखा हुआ था।"*** आपने उसे खा लिया।[1] **(सही)**

(٢٠٧٦) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ: «هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ؟» فَقُلْنَا: لَا قَالَ: «فَإِنِّي إِذًا صَائِمٌ» . ثُمَّ أَتَانَا يَوْمًا آخَرَ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُهْدِيَ لَنَا حَيْسٌ فَقَالَ: «أَرِينِيهِ فَلَقَدْ أَصْبَحْتُ صَائِمًا» فَأَكَلَ. رَوَاهُ مُسلم

2077. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मे सुलेम रज़ियल्लाहू अन्हा के घर तशरीफ़ लाएं तो उन्होंने खजूर और घी आप की ख़िदमत में पेश किया तो आपने फ़रमाया: ***"घी और खजूरें वापस उनके बरतन में डाल दो क्योंकि मैं रोज़े से हूं"।*** फिर आप खड़े हुए और घर के एक कोने में नफ़िल नमाज़ अदा की और उम्मे सुलेम रज़ियल्लाहू अन्हा और उनके घर वालो के लिए दुआ फ़रमाई।[2] **(सही)**

(٢٠٧٧) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أُمِّ سُلَيْمٍ فَأَتَتْهُ بِتَمْرٍ وَسَمْنٍ فَقَالَ: «أَعِيدُوا سَمْنَكُمْ فِي سِقَائِهِ وَتَمْرَكُمْ فِي وِعَائِهِ فَإِنِّي صَائِمٌ» . ثُمَّ قَامَ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ الْبَيْتِ فَصَلَّى غَيْرَ الْمَكْتُوبَةِ فَدَعَا لأم سليم وَأهل بَيتهَا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2078. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

(٢٠٧٨) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى

---

1. *मुस्लिम (2715)*
2. *बुख़ारी (1982)*

طَعَامٍ وَهُوَ صَائِمٌ فَلْيَقُلْ: إِنِّي صَائِمٌ ". وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيُجِبْ فَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيُصَلِّ وَإِن كَانَ مُفطرا فيطعم» . رَوَاهُ مُسلم

"जब तुम में से किसी को खाने की दावत दी जाए जबकि वह रोज़े से हो तो वह कहे मैं रोजे से हूं"। और एक रिवायत में है ***"जब तुम में से किसी की दावत की जाए तो वह क़ुबूल करें अगर वह रोज़े से हो तो वह दुआ करें और अगर रोज़े से ना हो तो खाना खा ले"।***[1] **(सही)**

الْفَصْل الثَّانِي

दूसरा भाग

(٢٠٧٩) عَنْ أُمِّ هَانِئٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ الْفَتْحِ فَتْحِ مَكَّةَ جَاءَتْ فَاطِمَةُ فَجَلَسَتْ عَلَى يَسَارِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأُمُّ هَانِئٍ عَنْ يَمِينِهِ فَجَاءَتِ الْوَلِيدَةُ بِإِنَاءٍ فِيهِ شَرَابٌ فَنَاوَلَتْهُ فَشَرِبَ مِنْهُ ثُمَّ نَاوَلَهُ أُمَّ هَانِئٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَدْ أَفْطَرْتُ وَكُنْتُ صَائِمَةً فَقَالَ لَهَا: «أَكُنْتِ تَقْضِينَ شَيْئًا؟» قَالَتْ: لَا. قَالَ: «فَلَا يَضُرُّكِ إِنْ كَانَ تَطَوُّعًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَحْمَدَ وَالتِّرْمِذِيِّ نَحْوُهُ وَفِيهِ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمَا إِنِّي كُنْتُ صَائِمَةً فَقَالَ: «الصَّائِمُ أَمِيرُ نَفْسِهِ إِنْ شَاءَ صَامَ وَإِنْ شَاءَ أفطر

2079. उम्मे हानी रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं जब फ़तेह मक्का का दिन था तो फ़ातिमा रज़ियल्लाहू अन्हा आयीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बायें तरफ़ बैठ गईं जबकि उम्मे हानि रज़ियल्लाहू अन्हा आपके दायीं तरफ़ थी फिर एक लौंडी बरतन में पीने की चीज़ लाई और उसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया आपने उससे नोश फ़रमाया, इसके बाद आपने बरतन उम्मे हानि को दिया तो उन्होंने इससे पिया फिर उन्होंने कहा अल्लाह के रसूल! मैंने तो रोज़ा तोड़ दिया है मैं तो रोज़े से थीं आपने उन्हें फरमाया: ***"क्या तुम कोई क़ज़ा दे रही थीं?"*** उन्होंने कहा नहीं आपने फरमाया: ***"अगर नफली था तो फिर तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं"।*** अबू दावूद, तिरमिज़ी, दारमी, अहमद और तिरमिज़ी की एक रिवायत इसी तरह है और इसमें है उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल! मैं तो रोज़े से थीं आपने फरमाया: ***"नफ़ली रोज़ेदार अपने नफ़्स का अमीर है अगर चाहे तो रखे (यानी पूरा करें) अगर चाहे तो इफ़्तार करें"।***[2] **(ज़ईफ़)**

---

1. मुस्लिम (2702)

2. ज़ईफ़, अबू दावूद (2456), तिरमिज़ी (731,732), दारमी (1743), अहमद (2743)

2080. इमाम ज़ोहरी, उरवा से और वह आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत करते हैं, उन्होंने फरमाया: मैं और हफ़्सा रोज़े से थीं हमें खाना पेश किया गया तो हमें इसकी ख़्वाहिश हुई तो हमने इसमें से खा लिया हफ़्सा रज़ियल्लाहू अन्हा ने कहा, अल्लाह के रसूल! हम दोनों रोज़े से थीं, हमे खाना पेश किया गया तो हमें इसकी ख़्वाहिश हुई तो हमने इसमें से खा लिया आपने फ़रमाया: ***"इसकी जगह किसी और दिन से इसे क़ज़ा करो"।*** तिरमिज़ी और उन्होंने हुफ्फाज़ की जमात का ज़िक्र किया, उन्होंने ज़ोहरी अन आयशा की सनद से मुर्सल रिवायत किया है और उन्होंने इसमें उरवा का ज़िक्र नहीं किया, और यही ज़्यादा सहीह है और इमाम अबू दावूद ने इसे उरवा के आज़ाद किये हुए गुलाम ज़ुमैल अन उरवा अन आयशा की सनद से रिवायत किया है।[1] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٨٠) وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ صَائِمَتَيْنِ فَعَرَضَ لَنَا طَعَامٌ اشْتَهَيْنَاهُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ فَقَالَتْ حَفْصَةُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ [ص: ٦٤٣] إِنَّا كُنَّا صَائِمَتَيْنِ فَعُرِضَ لَنَا طَعَامٌ اشْتَهَيْنَاهُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ. قَالَ: «اقْضِيَا يَوْمًا آخَرَ مَكَانَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَذَكَرَ جَمَاعَةً مِنَ الْحُفَّاظِ رَوَوْا عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَائِشَةَ مُرْسَلًا وَلَمْ يذكرُوا فِيهِ عَن عُرْوَة وَهَذَا أَصَح وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ عَنْ زُمَيْلٍ مَوْلَى عُرْوَةَ عَن عُرْوَة عَن عَائِشَة

2081. उम्मे अम्मारा बिन्ते काब रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके यहां तशरीफ लाए तो उन्होंने आपके लिए खाना मंगवाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंहें फरमाया: ***"खाओ"*** उन्होंने कहा मैं रोज़े से हूं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"जब रोज़ेदार के पास खाया जाए तो फ़रिश्ते उसके लिए मग़फिरत तलब करते रहते हैं यहां तक कि खाने वाले खाने से फारिग़ हो जाए"।***[2] **(सही)**

(٢٠٨١) وَعَن أم عمَارَة بنت كَعْب إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَيْهَا فَدَعَتْ لَهُ بِطَعَامٍ فَقَالَ لَهَا: «كُلِي» . فَقَالَتْ: إِنِّي صَائِمَةٌ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الصَّائِمَ إِذَا أُكِلَ عِنْدَهُ صَلَّتْ عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ حَتَّى يَفْرَغُوا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

---

1. सनद ज़ईफ़, तिरमिज़ी (735), अबू दावूद (2457)

2. सही, अहमद (27599), तिरमिज़ी (785), इब्ने माजा (1748), दारमी (1745)

الْفَصْل الثَّالِث

तीसरा भाग

(٢٠٨٢) عَن بُرَيْدَة قَالَ: دَخَلَ بِلَالٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَتَغَدَّى فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغَدَاءَ يَا بِلَالُ» . قَالَ: إِنِّي صَائِمٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَأْكُلُ رِزْقَنَا وَفَضْلُ رِزْقِ بِلَالٍ فِي الْجَنَّةِ أشعرت يَا بِلَال أَن الصَّائِم تُسَبِّح عِظَامه وَتَسْتَغْفِر لَهُ الْمَلَائِكَةُ مَا أُكِلَ عِنْدَهُ؟» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

2082. बुरैदा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं बिलाल रज़ियल्लाहू अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाश्ता कर रहे थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***“बिलाल! नाश्ता कर लो”*** उन्होंने कहा अल्लाह के रसूल! में रोज़े से हूँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***“हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं जबकि बिलाल का उम्दा रिज़्क़ जन्नत में है, बिलाल! क्या तुम्हें मालूम है जब रोज़ेदार के पास खाया जाए तो उसकी हड्डियां तस्बीह बयान करती हैं और फरिश्ते उसके लिए मग़फिरत तलब करते हैं”।***[1] **(मौज़ू)**

---

1. सनद मौज़ू, शोएबुल ईमान बैहक़ी (3586), इब्ने माजा (1749)

بَاب لَيْلَة الْقدر
शब-ए-क़द्र का बयान

الْفَصْل الأول
पहला भाग

2083. आयशा रज़ियाल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक रातों में शबे क़द्र तलाश करो"।***[1] **(सही)**

(٢٠٨٣) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوِتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ من رَمَضَان» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2084. इब्ने उमर ज़ियाल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबा को शब-ए-क़द्र ख़्वाब की हालत में रमज़ान के आख़िरी हफ्ते (सात दिन) में दिखाई गई, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"मैं देखता हूँ कि तुम्हारे ख़्वाब आख़िरी हफ्ते में मुत्तफ़िक़ व मुवाफ़िक़ है, फिर जो शख़्स इसे तलाश करना चाहे तो वह इसे आख़िरी हफ्ते में तलाश करें"।***[2] **(सही)**

(٢٠٨٤) وَعَن ابْن عمر قَالَ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُرُوا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْمَنَامِ فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَرَى رُؤْيَاكُمْ قَدْ تَوَاطَأَتْ فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ فَمَنْ كَانَ مُتَحَرِّيهَا فَلْيَتَحَرَّهَا فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2085. इब्ने अब्बास रज़ियाल्लाहू अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ***"शब-ए-क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अशरे में तलाश करो, शब-ए-क़द्र बाक़ी रहने वाली नवी रात, सातवी रात, पांचवी रात (यानी 21वीं 23वीं और 25 वीं रात) में है"।***[3] **(सही)**

(٢٠٨٥) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ: فِي تَاسِعَةٍ تَبْقَى فِي سَابِعَةٍ تَبْقَى فِي خَامِسَةٍ تَبْقَى. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2086. अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहू अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान के पहले पहले अशरे में एतिक़ाफ़ किया, फिर आपने दरमियाने अशरे में एक

(٢٠٨٦) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اعْتَكَفَ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ ثُمَّ اعْتَكَفَ الْعَشْرَ الْأَوْسَطَ فِي قُبَّةٍ

---

1. बुख़ारी (2017)

2. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2015), मुस्लिम (2761)

3. बुख़ारी (2021)

छोटे से ख़ेमे में एतिक़ाफ़ किया, फिर आपने अपना सर बाहर निकालकर फरमाया: ***“मैंने पहला अशरा एतिक़ाफ़ किया, मैं इस रात को तलाश करना चाहता था, फिर मैंने दरमियाने अशरे का एतिक़ाफ़, फिर मेरे पास फ़रिश्ता आया तो मुझे कहा गया कि वह आख़री अशरे में है, जो शख़्स मेरे साथ एतिक़ाफ़ करना चाहे तो वह आख़री अशरा एतिक़ाफ़ करे, मुझे यह रात दिखाई गई थी फिर मुझे भुला दी गई मैंने इसकी सुबह अपने आपको कीचड़ में सजदा करते हुए देखा है, इसे आख़िरी अशरे में तलाश करो और इसे हर ताक़ रात में तलाश करो”।*** रावी बयान करते हैं, इस रात बारिश हुई, मस्जिद की छत शाखों से बनी हुई थी वो टपकने लगी, मेरी आंखों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आपकी पेशानी पर कीचड़ का निशान था और यह इक्कीसवी की रात (यानि इक्कीसवी तारीख) थी माने के लिहाज़ से बुखारी, मुस्लिम इस पर मुत्तफ़िक़ है और **((فقيل لي أنهافي العشرألاوآخر**))तक मुस्लिम के अल्फाज़ है, जबकि बाकी सही बुख़ारी के अल्फाज़ है।[1] **(सही)**

تُرْكِيَّةٍ ثُمَّ أَطْلَعَ رَأسه. فَقَالَ: «إِنِّي اعتكفت الْعشْر الأول أَلتمس هَذِه اللَّيْلَة ثمَّ اعتكفت الْعَشْرَ الْأَوْسَطَ ثُمَّ أُتِيتُ فَقِيلَ لِي إِنَّهَا فِي الْعشْر الْأَوَاخِرِ فَمن اعْتَكَفَ مَعِي فَلْيَعْتَكِفِ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ فَقَدْ أُرِيتُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ ثُمَّ أُنْسِيتُهَا وَقَدْ رَأَيْتُنِي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطِينٍ مِنْ صَبِيحَتِهَا فَالْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ وَالْتَمِسُوهَا فِي كُلِّ وِتْرٍ» . قَالَ: فَمَطَرَتِ السَّمَاءُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ وَكَانَ الْمَسْجِدُ عَلَى عَرِيشٍ فَوَكَفَ الْمَسْجِدُ فَبَصُرَتْ عَيْنَايَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى جَبْهَتِهِ أَثَرُ المَاء والطين وَالْمَاء مِنْ صَبِيحَةِ إِحْدَى وَعِشْرِينَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ فِي الْمَعْنَى وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ إِلَى قَوْلِهِ: " فَقِيلَ لِي: إِنَّهَا فِي الْعشْر الْأَوَاخِرِ ". وَالْبَاقِي لِلْبُخَارِيِّ

(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2087. अब्दुल्ला बिन उनैस रज़ियल्लाहू अन्हु की रिवायत में है, फ़रमाया तेईसवी रात।[2] **(सही)**

(٢٠٨٧) وَفِي رِوَايَةِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُنَيْسٍ قَالَ: «لَيْلَة ثَلَاث وَعشْرين» . رَوَاهُ مُسلم

2088. ज़िर् बिन हुबैश बयान करते हैं मैंने उबई बिन काब रज़ियल्लाहू अन्हु से पूछा आप के भाई इब्ने मसूद रज़ियल्लाहू अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स पूरा साल तहज्जुद पढ़ेगा वह शब-ए-क़द्र पा लेगा तो उन्होंने फ़रमाया: अल्लाह उस पर रहम फ़रमाए, उन्होंने यह इरादा किया कि लोग इस पर

(٢٠٨٨) وَعَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ قَالَ: سَأَلْتُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ فَقُلْتُ إِنَّ أَخَاكَ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ: مَنْ يَقُمِ الْحَوْلَ يُصِبْ لَيْلَةَ الْقَدْرِ. فَقَالَ C أَرَادَ أَنْ لَا يَتَّكِلَ النَّاسُ أَمَا إِنَّهُ قَدْ عَلِمَ أَنَّهَا فِي رَمَضَانَ وَأَنَّهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ وَأَنَّهَا لَيْلَةُ سَبْعٍ وَعِشْرِينَ ثُمَّ حَلَفَ لَا يَسْتَثْنِي

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2016), मुस्लिम (2769)
2. मुस्लिम (2775)

أَنَّهَا لَيْلَةُ سَبْعٍ وَعِشْرِينَ. فَقُلْتُ: بِأَيِّ شَيْءٍ تَقُولُ ذَلِكَ يَا أَبَا الْمُنْذِرِ؟ قَالَ: بِالْعَلَامَةِ أَوْ بِالْآيَةِ الَّتِي أَخْبَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهَا تَطْلُعُ يَوْمَئِذٍ لَا شُعَاعَ لَهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

ही भरोसा ना कर लें, हालांकि उन्हें मालूम है कि वह (शब-ए-क़द्र) रमज़ान है में है और आख़िरी अशरे में और वह सत्ताईसवी रात है, फिर उन्होंने इंशा अल्लाह कहे बग़ैर क़सम उठा कर कहा वह सत्ताईसवी शब है, मैंने कहा अबू मुन्ज़िर! आप यह कैसे कहते हैं? उन्होंने फरमाया: इस अलामत या निशानी की बिना पर जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बताई थी, इस रोज़ सूरज निकलेगा तो उसकी किरणे नहीं होंगीं।[1] **(सही)**

(٢٠٨٩) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَجْتَهِدُ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مَا لَا يَجْتَهِدُ فِي غَيْره. رَوَاهُ مُسلم

2089. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस क़द्र आख़िरी अशरे में (इबादत व सख़ावत करने की) कोशिश करते थे वह इसके अलावा किसी और वक़्त में नहीं करते थे।[2] **(सही)**

(٢٠٩٠) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ الْعَشْرُ شَدَّ مِئْزَرَهُ وَأَحيا ليله وَأَيْقَظَ أَهله (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2090. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं, जब आख़िरी अशरा शुरू हो जाता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (इबादत के लिए) कमर कस लेते, रात भर जागते और अपने घर वलो को भी जगाते थे।[3] **(सही)**

الْفَصْلُ الثَّانِي

दूसरा भाग

(٢٠٩١) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ عَلِمْتُ أَيَّ لَيْلَةٍ لَيْلَةُ الْقَدْرِ مَا أَقُولُ فِيهَا؟ قَالَ: " قُولِي: اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي ". رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجه وَالتِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

2091. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं मैंने कहा अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर मैं जान लूँ कि कौन सी रात शब-ए-क़द्र है, तो मैं इसमें क्या दुआ करूं आपने फरमाया: ***“कहो अल्लाह बेशक तू दरगुज़र फ़रमाने वाला है, दरगुज़र को पसंद फरमाता है लिहाज़ा मुझे भी दरगुज़र फरमा”।*** अहमद, इब्ने माजा, तिरमिज़ी और उन्होंने इसे सही क़रार दिया है।[4] **(ज़ईफ़)**

---

1. मुस्लिम (1785)

2. मुस्लिम (2788)

3. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2024), मुस्लिम (2787)

4. सनद ज़ईफ़, अहमद (25898), इब्ने माजा (3850), तिरमिज़ी (3513)

(٢٠٩٢) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْتَمِسُوهَا يَعْنِي لَيْلَةَ الْقدر فِي تسع بَقينَ أَو فِي سبع بَقينَ أَو فِي خمس بَقينَ أَوْ ثَلَاثٍ أَوْ آخِرِ لَيْلَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2092. अबू बकरह रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना: ***"शब-ए-क़द्र को इक्कीसवी या तेइसवी या पचीसवी या सत्ताईसवी या उन्नतीसवी रात में तलाश करो"।***[1] **(सही)**

(٢٠٩٣) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ فَقَالَ: «هِيَ فِي كُلِّ رَمَضَانَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَقَالَ: رَوَاهُ سُفْيَان وَشعْبَة عَن أبي إِسْحَق مَوْقُوفا على ابْن عمر

2093. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शब-ए-क़द्र के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: ***"वह पूरे रमज़ान में है"।*** अबू दाऊद और उन्होंने फ़रमाया: सुफ़ियान और शोबा ने अबू इसहाक़ की सनद से इब्ने उमर से मौक़ूफ़ रिवायत किया है।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢٠٩٤) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُنَيْسٍ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي بَادِيَةً أَكُونُ فِيهَا وَأَنَا أُصَلِّي فِيهَا بِحَمْد الله فَمُرْنِي بِلَيْلَةٍ أَنْزِلُهَا إِلَى هَذَا الْمَسْجِدِ فَقَالَ: «انْزِلْ لَيْلَة ثَلَاث وَعشْرين» . قيل لِابْنِهِ: كَيْفَ كَانَ أَبُوكَ يَصْنَعُ؟ قَالَ: كَانَ يَدْخُلُ الْمَسْجِدَ إِذَا صَلَّى الْعَصْرَ فَلَا يَخْرُجُ مِنْهُ لِحَاجَةٍ حَتَّى يُصَلِّيَ الصُّبْحَ فَإِذَا صَلَّى الصُّبْحَ وَجَدَ دَابَّتَهُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ فَجَلَسَ عَلَيْهَا وَلحق بباديته. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2094. अब्दुल्ला बिन उनैस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं, मैंने कहा अल्लाह के रसूल! मैं अपने जंगल में रहता हूं और मैं अलहमदुलिल्लाह वही नमाज़ पढ़ता हूं, आप मुझे एक रात के बारे में हुक्म फ़रमाइए कि मैं इस रात में इस मस्जिद में क़याम करुं, आपने फ़रमाया: ***"तेइसवी रात को क़याम करो"।*** उनके बेटे से पूछा गया आपके वालिद कैसे किया करते थे? उन्होंने बताया जब आप असर पढ़ लेते तो मस्जिद में दाख़िल हो जाते और फिर आप किसी ज़रुरत के लिए वहां से ना निकलते यहाँ तक कि नमाज़े फज्र पढ़ लेते जब फज्र पढ़ लेते तो वह मस्जिद के दरवाज़े पर अपनी सवारी पाते और उस पर सवार होकर अपने जंगल में आ जाते।[3] **(हसन)**

الْفَصْل الثَّالِث

तीसरा भाग

(٢٠٩٥) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُخْبِرَنَا بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ

2095. उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शब-ए-

---

1. सनद सही, तिरमिज़ी (794), सही इब्ने ख़ुज़ैमा (2175), सही इब्ने हिब्बान (3678)

2. सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (1387)

3. सनद हसन, अबू दावूद (1380), सही इब्ने ख़ुज़ैमा (2200), इसकी असल सही मुस्लिम (2775) में है

فَتَلَاحَى رَجُلَانِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ: «خَرَجْتُ لِأُخْبِرَكُمْ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلَاحَى فُلَانٌ وَفُلَانٌ فَرُفِعَتْ وَعَسَى أَنْ يَكُونَ خَيْرًا لَكُمْ فَالْتَمِسُوهَا فِي التَّاسِعَةِ وَالسَّابِعَةِ وَالْخَامِسَة» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

क़द्र के मुताल्लिक़ हमें बताने के लिए तशरीफ़ लाए तो दो मुसलमान आपस में झगड़ रहे थे, आपने फ़रमाया: ***"मैं तुम्हें शब-ए-क़द्र के बारे में बताने के लिए आया था लेकिन फुला और फुला आपस में झगड़ पड़े तो वह मुझ से उठा ली गई और मुमकिन है कि तुम्हारे लिए बेहतर हो लिहाज़ा तुम इसे इक्कीसवीं, तेइसवी और पचीसवी की रात में तलाश करो"।***[1] **(सही)**

(٢٠٩٦) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ لَيْلَةُ الْقَدْرِ نزل جِبْرِيل عَلَيْهِ السَّلَام فِي كُبْكُبَةٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ يُصَلُّونَ عَلَى كُلِّ عَبْدٍ قَائِمٍ أَوْ قَاعِدٍ يَذْكُرُ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ عِيدِهِمْ يَعْنِي يَوْمَ فِطْرِهِمْ بَاهَى بِهِمْ مَلَائِكَتَهُ فَقَالَ: يَا مَلَائِكَتِي مَا جَزَاءُ أَجِيرٍ وَفَّى عَمَلَهُ؟ قَالُوا: رَبَّنَا جَزَاؤُهُ أَنْ يُوَفَّى أَجْرَهُ. قَالَ: مَلَائِكَتِي عَبِيدِي وَإِمَائِي قَضَوْا فَرِيضَتِي عَلَيْهِمْ ثُمَّ خَرَجُوا يَعُجُّونَ إِلَى الدُّعَاءِ وَعِزَّتِي وَجَلَالِي وَكَرَمِي وَعُلُوِّي وَارْتِفَاعِ مَكَانِي لأجيبنهم. فَيَقُول: ارْجعُوا فقد غَفَرْتُ لَكُمْ وَبَدَّلْتُ سَيِّئَاتِكُمْ حَسَنَاتٍ. قَالَ: فَيَرْجِعُونَ مَغْفُورًا لَهُمْ ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2096. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ***"जब शब-ए-क़द्र होती है तो जिब्राइल फरिश्तों की जमात में तशरीफ लाते हैं तो वह अल्लाह के ज़िक्र में मसरुफ हर खड़े, बैठे शख़्स पर रहमत भेजते हैं, जब उनकी ईद का दिन होता है तो अल्लाह तआला उनकी वजह से अपने फरिश्तों पर फ़ख्र करते हुए फ़रमाता है: मेरे फरिश्तों इस मज़दूर की क्या जज़ा होनी चाहिए जो अपना काम पूरा करता है? वह कहते हैं: परवरदिगार इसकी जज़ा यह है कि इसे पूरा पूरा बदला दिया जाए, अल्लाह तआला फ़रमाता है: मेरे फरिश्तों! मेरे बन्दों और मेरी बंदियों ने मेरी तरफ़ से इन पर दिए गए फ़र्ज़ को पूरा कर दिया फिर वह दुआएं पुकारते हुए निकले हैं, मुझे मेरी इज्ज़त ओ जलाल, मेरे करम ओ उलू और अपने बुलंद मक़ाम की क़सम, मैं इनकी दुआएं कुबूल करूंगा, वह फ़रमाता है: वापस चले जाओ मैंने तुम्हें बख़्श दिया और तुम्हारी ख़ताओ को नेकियों में बदल दिया,*** आपने फ़रमाया: ***"वो इस हाल में वापस आते हैं कि उनकी मग़फिरत हो चुकी होती है"।***[2] **(मौज़ू)**

---

1. बुख़ारी (2023)

2. सनद मौज़ू, शोएबुल ईमान बैहक़ी (3717)

بَاب اِلاعْتِكَاف
एतिक़ाफ़ का बयान

الْفَصْل الأول
पहला भाग

(٢٠٩٧) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللَّهُ ثُمَّ اعْتَكَفَ أَزْوَاجُهُ مِنْ بعده
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2097. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के आख़िरी अशरे में एतिक़ाफ़ करते रहे हैं यहाँ तक कि अल्लाह ने उन्हें वफ़ात दे दी, फिर आपकी वफ़ात के बाद आपकी बीवियों ने एतिक़ाफ़ किया।[1] **(सही)**

(٢٠٩٨) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَجْوَدَ النَّاسِ بِالْخَيْرِ وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَان وَكَانَ جِبْرِيلُ يَلْقَاهُ كُلَّ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ يَعْرِضُ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقُرْآنَ فَإِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيلُ كَانَ أَجْوَدَ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسلَة
(مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2098. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ैर ओ भलाई में सबसे ज़्यादा सखी थे और जब रमज़ान में जिब्राइल अलैहिस्सलाम आपसे मुलाकात करते तो आपकी सखावत बढ़ जाती, वो रमज़ान की हर रात आप से मुलाकात करते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें क़ुरान सुनाया करते थे, जब जिब्राईल आपसे मुलाकात करते तो आप ख़ैर ओ भलाई और सखावत करने में खुली हवा (तेज रफ्तार आंधी) से भी बढ़कर होते थे।[2] **(सही)**

(٢٠٩٩) وَعَن أَبِي هُرَيْرَة قَالَ: كَانَ يعرض على النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقُرْآنَ كُلَّ عَامٍ مَرَّةً فَعَرَضَ عَلَيْهِ مَرَّتَيْنِ فِي الْعَامِ الَّذِي قُبِضَ وَكَانَ يَعْتَكِفُ كُلَّ عَامٍ عَشْرًا فَاعْتَكَفَ عِشْرِينَ فِي الْعَامِ الَّذِي قُبِضَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2099. अबू हुरैरा रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर साल एक मर्तबा क़ुरान सुनाया जाता था और जिस साल आपकी जान कब्ज़ की गई उस साल दो मर्तबा सुनाया गया और आप हर साल दस दिन एतिक़ाफ़ किया करते थे, लेकिन जिस साल आपकी जान कब्ज़ की गई उस साल आपने बीस दिन एतिक़ाफ़ किया।[3] **(सही)**

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2026), मुस्लिम (2784)
2. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (6,1902), मुस्लिम (6009)
3. बुख़ारी (4998)

(٢١٠٠) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اعْتَكَفَ أَدْنَى إِلَيَّ رَأْسَهِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَأُرَجِّلُهُ وَكَانَ لَا يَدْخُلُ الْبَيْتَ إِلَّا لِحَاجَةِ الْإِنْسَانِ" (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2100. आयशा रज़ियल्लाहू अन्हा बयान करती हैं जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एतिक़ाफ़ फ़रमाया करते तो आप अपना सर मुबारक मेरे क़रीब कर देते जब कि आप मस्जिद में होते थे मैं आपके कंघी कर देती और आप सिर्फ इंसानी हाजत के तहत ही घर में तशरीफ लाया करते थे।[1] **(सही)**

(٢١٠١) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ عُمَرَ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " كُنْتُ نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ لَيْلَةً فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ؟ قَالَ: «فأوف بِنَذْرِك» (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

2101. इब्ने उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत है कि उमर रज़ियल्लाहू अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मसला पूछा, मैंने दौरे जाहिलियत में नज़र मानी थी कि मैं मस्जिदे हराम में एक रात एतिक़ाफ़ करूंगा, आप ने फरमाया: ***"अपनी नज़र पूरी करो"।***[2] **(सही)**

الْفَصْلُ الثَّانِي

दूसरा भाग

(٢١٠٢) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْتَكِفُ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ فَلَمْ يَعْتَكِفْ عَامًا. فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمقبل اعْتكف عشْرين. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2102. अनस रज़ियल्लाहू अन्हु बयान करते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के आख़िरी दस दिन में एतिक़ाफ़ किया करते थे, लेकिन आपने एक साल एतिक़ाफ़ ना किया तो फिर अगले साल आपने बीस दिन का एतिक़ाफ़ किया।[3] **(सही)**

(٢١٠٣) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَة عَنْ أَبِي بن كَعْب

2103. इमाम अबू दाऊद और इब्ने माजा ने इसे उबई बिन काब से रिवायत किया है।[4] **(सही)**

(٢١٠٤) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَعْتَكِفَ صَلَّى الْفَجْرَ ثُمَّ دَخَلَ فِي مُعْتَكَفِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2104. आयशा रज़ियाल्लाहू अन्हा बयान करती हैं जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एतिक़ाफ़ करने का इरादा फ़रमाते तो आप नमाज़े फज्र अदा करते और फिर अपने एतिक़ाफ़ की जगह में तशरीफ़ ले जाते।[5] **(सही)**

---

1. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2029), मुस्लिम (2784)

2. मुत्तफ़िक़ अलैह, बुख़ारी (2032), मुस्लिम (6009)

3. सही, तिरमिज़ी (803)

4. सही, अबू दावूद (2463), इब्ने माजा (1770)

5. सही, अबू दावूद (2464), इब्ने माजा (1771)

2105. आयशा रज़ियाल्लाहू अन्हा बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हालतें एतिक़ाफ़ में मरीज़ की अयादत कर लिया करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाल में चलते जाते और रूके बगैर उसका हाल दरियाफ्त कर लेते।[1] **(ज़ईफ़)**

(٢١٠٥) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُ الْمَرِيضَ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فَيَمُرُّ كَمَا هُوَ فَلَا يُعَرِّجُ يَسْأَلُ عَنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2106. आयशा रज़ियाल्लाहू अन्हा बयान करती हैं एतिक़ाफ़ करने वाले के लिए मसनून यही है कि वह किसी मरीज़ की ना अयादत करे और ना जनाज़े में शिरकत करे, ना औरत से जमा करें और ना उसे गले लगाये और किसी बहुत ही ज़रुरी काम के अलावा एतिक़ाफ़ की जगह से बाहर ना निकले और रोज़े के बगैर एतिक़ाफ़ नहीं है और ना जामा मस्जिद के बगैर।[2] **(ज़ईफ़)**

(٢١٠٦) وَعَن عَائِشَة رَضِي الله عَنْهَا قَالَتْ: السُّنَّةُ عَلَى الْمُعْتَكِفِ أَنْ لَا يَعُودَ مَرِيضًا وَلَا يَشْهَدَ جِنَازَةً وَلَا يَمَسَّ الْمَرْأَةَ وَلَا يُبَاشِرُهَا وَلَا يَخْرُجَ لِحَاجَةٍ إِلَّا لِمَا لابد مِنْهُ وَلَا اعْتِكَافَ إِلَّا بِصَوْمٍ وَلَا اعْتِكَافَ إِلَّا فِي مَسْجِدٍ جَامِعٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

الْفَصْلُ الثَّالِث
तीसरा भाग

2107. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहू अन्हुमा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि जब आप एतिक़ाफ़ फरमाते तो तौबा के सुतून के पीछे आपके लिए बिस्तर बिछा दिया जाता या चारपाई लगा दी जाती।[3] **(हसन)**

(٢١٠٧) عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا اعْتَكَفَ طُرِحَ لَهُ فِرَاشُهُ أَوْ يُوضَعُ لَهُ سَرِيرُهُ وَرَاءَ أسطوانه التَّوْبَة. رَوَاهُ ابْن مَاجَ

2108. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहू अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एतिक़ाफ़ करने वाले के बारे में फरमाया: ***"वह गुनाहों से रुका रहता है और तमाम नेकिया करने वाले की तरह से नेकियों का सवाब मिलता रहता है"।*** (जिनको वह पहले किया करता था)[4] **(ज़ईफ़)**

(٢١٠٨) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي الْمُعْتَكِفِ: «هُوَ يَعْتَكِفُ الذُّنُوبَ وَيُجْرَى لَهُ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَات كلهَا» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

---

1. सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2472)
2. सनद ज़ईफ़, अबू दावूद (2473)
3. सनद हसन, इब्ने माजा (1774)
4. सनद ज़ईफ़, इब्ने माजा (1781)